Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
# हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-25
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 13 सितम्बर से 19 सितम्बर 2017 तक
आश्विन कृष्ण अष्टमी से आश्विन कृष्ण चतुर्दशी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

ना हम हारे, न तुम.. पृष्ठ- 3

पत्ता गोभी एवं पुदीना के... पृष्ठ- 4

वर्ण व्यवस्था तथा जात... पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तित्व और... पृष्ठ- 8

आंखें बन्द करके.... पृष्ठ- 12

- स्वतंत्रता का अहसास कराता हमारा संविधान
- नासूर बनता बांग्लादेशी घुसपैठियों का आतंक
- भारत ने जीती डोकलाम की बाजी, चीन की चाल पस्त
- क्या चीन के माल का बहिष्कार करना संभव है?
- लहूलुहान है पश्चिम एशिया

## दाऊद इब्राहिम को भारत लाने में पाकिस्तान अटका रहा है रोड़े

### दाऊद इब्राहिम को तुरन्त सौंपे पाकिस्तान : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

**केंद्रीय** गृह सचिव राजीव महर्षि ने कहा कि भगोड़ा माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम पाकिस्तान में है और कानून का सामना करने के लिए दाऊद को भारत लाने में वह देश रोड़े अटका रहा है। दाऊद इब्राहिम १९९३ के मुंबई विस्फोट मामलों में प्रमुख आरोपी है। उस घटना में २६० लोग मारे गए थे और सात सौ से ज्यादा लोग घायल हुए थे, महर्षि ने कहा कि सरकार सभी जरूरी कार्रवाई कर रही है ताकि दाऊद इब्राहिम को भारत शेष पृष्ठ 11 पर

## आईआईटी और सेंट्रल यूनिवर्सिटी में होंगे देशभक्तिपूर्ण रॉक शो

### राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत पर भी आधारित कार्यक्रम हो : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

**केंद्रीय** मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने निर्णय लिया है कि देश के आईआईटी और सेंट्रल यूनिवर्सिटी में जल्द ही देशभक्ति के रॉक बैंड शुरू होंगे। छात्रों को बहुत जल्द कैंपस में देशभक्ति से भरे गीत संगीत पर झूमने का मौका मिलेगा। मंत्रालय ने इन संस्थानों से म्यूजिक बैंड्स की मेजबानी करने को कहा है, जो वहां देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रम ऑर्गेनाइज करेंगे। यह इंडिया का टाइम है, नाम के कार्यक्रम के हिस्से के तौर पर सरकार ने कुछ खास बैंड निर्धारित किए हैं, जो देशभर के कैंपस में जाकर देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। यह प्रस्तुति खासकर बॉलीवुड के गानों पर होगी, एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया एक निजी मनोरंजन संस्था को यह काम दिया गया है, जिसने एक दर्जन के करीब रॉक बैंड की पहचान की है। वहीं इन कार्यक्रमों को अगले महीने कई संस्थानों में प्रस्तुत करने की योजना बनाई गई है। ये कार्यक्रम भारत की स्वतंत्रता के ७० साल और भारत छोड़ो आंदोलन के ७५ साल पूरा होने के जश्न में आयोजित किए जाएंगे। इससे पहले इस महीने की शुरूआत में ७०वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर सरकार ने सभी यूनिवर्सिटी और शैक्षणिक संस्थानों से कहा था कि वह छात्रों को स्वतंत्रता सेनानियों के स्मारक दिखाएं और शहीदों के घर लेकर जाएं। विश्वविद्यालयों और स्कूलों ने एक शपथ ग्रहण समारोह का भी आयोजन किया था, जिसमें शिक्षकों, छात्रों, गैर–शिक्षण कर्मचारियों ने देश को आतंकवाद–मुक्त, भ्रष्टाचार शेष पृष्ठ 11 पर

# राष्ट्रीय जीवन के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द

**भारत** भूमि पवित्र भूमि है, भारत देश मेरा तीर्थ है, भारत मेरा सर्वस्व है, भारत की पुण्य भूमि का अतीत गौरवमय है, यही वह भारतवर्ष है, जहाँ मानव प्रकृति एवं अन्तर्जगत के रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर पनपे थे।' स्वामी विवेकानंद के इन शब्दों से भारत, भारतीयता और भारतवासी के प्रति उनके प्रेम, समर्पण और भावनात्मक संबंध स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। स्वामी विवेकानन्द को युवा सोच का संन्यासी माना जाता है। विवेकानन्द केवल आध्यात्मिक पुरुष नहीं थे वरन् वे विचारों और कार्यों से एक क्रांतिकारी संत थे, जिन्होंने अपने देश के युवकों का आह्वान किया था—उठो, जागो और महान बनो। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि स्वामी विवेकानन्द ने ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता—प्राप्ति के लिए कभी भी प्रत्यक्ष रूप में प्रयत्न नहीं किए या यहाँ तक कि उस बारे में कभी बात भी नहीं की। यद्यपि यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि भारत के प्रति जो अगाध प्रेम स्वामी जी ने अन्य व्यक्तियों में संचारित किया था, वही स्वतंत्रता आन्दोलन की मुख्य प्रेरणा थी। नवजीवन प्रकाश कलकत्ता से प्रकाशित भूपेन्द्र नाथ दत्त की पुस्तक 'पेट्रिओट प्रॉफिट स्वामी विवेकानन्द' में उल्लेख है कि अपनी फ्रांसीसी शिष्या जोसेफाईन मोक्लियान से स्वामी जी ने कहा था कि क्या निवेदिता जानती नहीं है कि मैंने स्वतंत्रता के लिए प्रयास किया, किन्तु देश अभी तैयार नहीं है, इसलिए छोड़ दिया। देश भ्रमण के दौरान पूरे देश के राजाओं को जोड़ने का प्रयत्न संभवतः स्वामी जी ने किया होगा, जिसका संकेत उक्त चर्चा में मिलता है।

स्वामी विवेकानन्द की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रत्यक्ष रूप से कोई भागीदारी नहीं थी पर फिर भी आजादी के आंदोलन के सभी चरणों में उनका व्यापक प्रभाव था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर विवेकानन्द का प्रभाव, फ्रांसीसी क्रान्ति पर रूसो के प्रभाव अथवा रूसी और चीनी क्रांतियों पर कार्ल मार्क्स के प्रभाव की तुलना में किसी भी तरह से कमतर नहीं था। कोई भी स्वतंत्रता आंदोलन व्यापक राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि के बिना संभव नहीं है। सभी समकालीन स्रोतों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में राष्ट्रीयता की भावना के जागरण में विवेकानंद का सबसे सशक्त प्रभाव था। भगिनी निवेदिता के अनुसार, वह नींव के निर्माण में लगने वाले कार्यकर्ता थे। वास्तव में, जिस तरह रामकृष्ण बिना किसी पुस्तकीय ज्ञान के वेदांत के एक जीवंत प्रतीक थे तो उसी प्रकार विवेकानन्द राष्ट्रीय जीवन के प्रतीक थे। अंग्रेज पहले ही आशंकित हो चुके थे। अल्मोड़ा में पुलिस विवेकानन्द की गतिविधियों पर दृष्टि रख रही थी। २२ मई को श्रीमती एरिक हैमंड को भेजे अपने पत्र में भगिनी निवेदिता ने लिखा, "आज सुबह एक भिक्षु को यह चेतावनी मिली थी कि पुलिस अपने जासूसों के द्वारा स्वामी जी पर दृष्टि रख रही है निसंदेह, हम सामान्य रूप से इस बारे में जानते हैं। किंतु अब यह और स्पष्ट हो गया है और मैं इसे अनदेखा नहीं कर सकती, यद्यपि स्वामी जी इसे गंभीरता से नहीं लेते हैं। सरकार अवश्य ही मूर्खता कर रही है या कम से कम जब ऐसा स्पष्ट हो जाएगा, यदि वह उनसे उलझेगी। वह पूरे देश को जगाने वाली मशाल होगी और मैं इस देश में जीने वाली अब तक की सबसे निष्ठावान अंग्रेज महिला... उस मशाल से जागने वाली पहली महिला होऊँगी। हम स्वामी जी के शब्दों का प्रभाव कुख्यात विद्रोह कमेटी की रिपोर्ट में देख सकते हैं। यह कहती है, उसके लेखों और शिक्षाओं ने अनेक सुशिक्षित हिन्दुओं पर गहरी छाप छोड़ी है। ब्रिटिश सीआईडी जहाँ भी किसी क्रांतिकारी के घर की तलाशी लेने जाया करती थी, वहाँ उन्हें विवेकानंद जी की पुस्तकें मिलती थी। प्रसिद्ध देशभक्त क्रान्तिकारी ब्रह्मबांधव उपाध्याय और अश्विनी कुमार दत्त से चर्चा के दौरान हेमचन्द्र घोष ने सन् १९०६ में टिप्पणी की, 'मुझे अच्छी तरह याद है कि स्वामीजी ने मुझे बंगाली युवाओं की अस्थियों से एक ऐसा शक्तिशाली हथियार बनाने को कहा था, जो भारत को स्वतंत्र करा सकें।' अपनी प्रेरणादायी रचना, 'द रोल ऑफ ऑनर एनेक्डोट ऑफ इंडियन मार्टियर्स' में कालीचरण घोष बंगाल के युवा क्रांतिकारी के मन पर स्वामी जी के प्रभाव के बारे में लिखते हैं, स्वामी जी के संदेश ने बंगाली युवाओं के मनों को ज्वलंत राष्ट्र—भक्ति की भावना से भर दिया और उनमें से कुछ से कठोर राजनैतिक गतिविधि की प्रवृत्ति उत्पन्न की। स्वामी विवेकानन्द के बौद्धिक जगत में तैयार किए गए विक्षोभ के वातावरण के विस्फोट का आभास उनके देहांत के बाद बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में श्री अरविंद के उद्भव के तौर पर सामने आया। भगिनी निवेदिता ने स्वामी विवेकानंद के देशभक्ति और राष्ट्र—निर्माण के आदर्शों को एक आधारभूत संबल प्रदान किया।

# साप्ताहिक राशिफल

**मेष :** इस सप्ताह कुछ लोगों को पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वहन करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जरूरी नहीं कि हर बात पर किसी को तवज्जों दीजाये। गलत निर्णय ही गलतियों को बढ़ावा देते है। आप अपने कार्यो को अपनाकर्तव्य समझे तभी आपको तसल्ली होगी।

**वृष :** इस सप्ताह कुछ लोगों की मनः स्थिति अनियन्त्रि हो सकती है। राजनैतिक लोगों के साथ कुछ समय व्यतीत होने के संकेत है। धैर्य व साहस आपकी पहचान है, इसे बरकरार बनायें रखना अतिआवश्यक है। सन्तान के साथ अत्यधिक वार्तालाप न ही करें।

**मिथुन :** इस सप्ताह आपको किसी से लाभ लेने का मौका मिलेगा परन्तु आपका स्वाभिमान ऐसा करने नहीं देगा। आप यदि गैर सरकारी संस्था बनाने चाहते है, तो किसी नजदीकी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद न दें अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।

**कर्क :** इस सप्ताह आप कुछ कार्यो को लेकर असमंजस की स्थिति में पड़ सकते है इसलिए मन की स्वच्छता व ह्रदय की मिठास बनायें रखना. आपके लिए अति आवश्यक है। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी। बिना मांगे राय देना आपके लिए हितकर नहीं है।

**सिंह :** इस सप्ताह आपके मन में सन्तान के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। छात्र अपने दोस्तों से ज्यादा वफादारी न निभायें। रूके हुये धन के प्रति सक्रियता बनायें रखें। छात्र अपनी स्पष्टवादी बातों पर नियन्त्रण करें अन्यथा परिवार में किसी से खटपट हो सकती है।

**कन्या :** इस सप्ताह कुछ लोगों के कैरियर व व्यवसाय में प्रगति होने की सम्भावना है। अर्थ की योजनायें फलीभूत होगी। व्यवसायी वर्ग अपना लेखा—जोखा मेनटेन रखें अन्यथा हल्का सा तनाव हो सकता है। महिलाओं के आत्म—विश्वास में कमी व घबराहट महसूस होगी

**तुला :** इस सप्ताह आप जीविका को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। नवयुवक अपने इष्ट मित्रों के कारण तनावग्रस्त हो सकते है। धन के मामलें में व्यर्थ की चिन्ता बनी रहेगी। महिलाओं को अनावश्यक कार्यो से बचने की आवश्यकता है। कुछ लोगों के साथ विचार—विमर्श होगा।

**वृश्चिक :** कुछं लोगों का नयीं योजनाओं के प्रति मन उत्साहित रहेगा परन्तु अपने ही अंड़गा भी लगा सकते है। यदि आप कोई व्यवसाय आरम्भ करने जा रहें है, तो मंगलवार के दिन ही आरम्भ करें तो बेहतर रहेगा। रोजी व रोजगार से सम्बन्धित किये जा रहे प्रयासों में सफलता मिलने के आसार है।

**धनु :** इस समय कुछ लोगों की असमंजस वाली स्थिति इस सप्ताह मुसीबत में डाल सकती है, अतः इस पर नियन्त्रण करने का प्रयास करें। मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है।

**मकर :** समय का उपयोग करने से समस्यायें मन पर हावी नहीं होती है। गैर सरकारी चीजों से लाभ मिल सकता है। आप यह न सोचे कि आपकी किस गलती के कारण यह मुश्किल पैदा हुयी है। आपको यह सोचना है कि इससे कैसे निपटा जाए।

**कुम्भ :** व्यापारिक स्थल पर कई तरह के लोग होते है। सभी लोंगो के साथ सामंजस्य बनायें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है। सामाजिक सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी हो सकती है। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होने की सम्भावना है। खान—पान पर विशेष ध्यान दें।

**मीन :** इस सप्ताह वही कार्य करें जिनमें आपका मन लगे वरना तनाव से छुटकारा पाना मुश्किल होगा। सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

# श्रीमद्भगवत गीता

**भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।**
**ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप।।**

परन्तु हे परंतप अर्जुन! अनन्यभक्ति के द्वारा इस प्रकार चतुभुजरूपवाला मैं प्रत्यक्ष देखने के लिये तत्त्व से जानने के लिये तथा प्रवेश करने के लिये अर्थात् एकीभाव से प्राप्त होने के लिये भी शक्य हूँ।।५४।।

**मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङगवर्जितः।**
**निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।**

हे अर्जुन! जो पुरुष केवल मेरे ही लिये सम्पूर्ण कर्त्तव्यकर्मों को करने वाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित है और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह अनन्य—भक्तियुक्त पुरुष मुझ को ही प्राप्त होता है।।५५।।

**अथ द्वादशोऽध्यायः**

**एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।**
**ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।।**

अर्जुन बोले— जो अनन्यप्रेमी भक्तजन पूर्वोक्त प्रकार से निरन्तर आपके भजन—ध्यान में लगे रहकर आप सगुणरूप परमेश्वर को और दूसरे जो केवल अविनाशी सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म को ही अतिश्रेष्ठ भाव से भजते हैं— उन दोनों प्रकार के उपासकों में अति उत्तम योगवेत्ता कौन हैं?।।१।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 13 सितम्बर से 19 सितम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

# स्वतंत्रता का अहसास कराता हमारा संविधान

**भारतीय** संविधान में वर्णित मूल अधिकार भारतीय नागरिकों को सचमुच स्वतंत्रा का अहसास कराते हैं। इन अधिकारों की बदौलत ही हर भारतीय नागरिक, चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ग या जाति का हो, ससम्मान जीने का हक प्राप्त करता है। अगर समाज या सरकार किसी तरीके से इन अधिकारों के उल्लंघन की चेष्टा करते हैं, तो भारत की न्याय व्यवस्था उसे संरक्षण देती है। सर्वोच्च अदालत ने निजता के अधिकार को मौलिक अधिकारों का हिस्सा मानकर एक बार फिर भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकारों को मजबूती से रेखांकित किया है। दरअसल आधार कार्ड में मांगी जा रही जानकारियों, विभिन्न कार्यों के लिए आधार कार्ड की अनिवार्यता बढ़ाने और साइबर सेंधमारी के खतरे के बीच निजता के उल्लंघन का सवाल उठने लगा था। यह आशंका बार–बार जतलाई गई कि सरकार आम नागरिक की उंगलियों के निशान से लेकर जो तमाम निजी जानकारियां एकत्र कर रही है, अगर वह अवांछित समूहों तक पहुंच जाए, तो क्या यह किसी की निजता का उल्लंघन नहीं होगा। हर इंसान को अपने निजी जीवन से जुड़ी जानकारियां किसी और तक न पहुंचने देने का हक है। लेकिन आधार की बढ़ती अनिवार्यता के चलते इस हक पर खतरा नजर आ रहा था। संचार क्रांति के दौर में उपभोक्ता के डिटेल्स, सेवा प्रदाता कंपनी द्वारा तीसरी पार्टी को उपलब्ध कराने का खेल होता ही है, जिसके कारण मोबाइलधारियों को कई बार अनचाहे फोन काल्स आते हैं। अगर मोबाइल नंबर किसी अनजान तक पहुंच सकते हैं, तो आधार कार्ड जैसी व्यवस्था में जहां नागरिक की सारी जानकारी दर्ज रहती है, उसके भी अनजान हाथों में पड़ने का खतरा बना हुआ था। क्योंकि सरकार द्वारा चलाए जा रही सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं से लेकर तमाम जरूरी सुविधाओं के लिए आधार कार्ड को अनिवार्य किया जाने लगा। बैंक के कामकाज से लेकर अनुदान ग्रहण करने तक और कई अन्य कार्यों के लिए आधार कार्ड की अनिवार्यता का सवाल और उस पर विमर्श निजता के अधिकार तक पहुंच गया। जब आधार कार्ड की जरूरत का संबंध निजता के अधिकार में दखल से जोड़ा गया और इस पर अदालत में याचिकाएं दर्ज होने लगीं तो २०१५ में सर्वोच्च न्यायालय में सरकार के वकीलों का तर्क था कि ये हो सकता है कि आधार लोगों की निजता में दखल देता हो, लेकिन क्या निजता का अधिकार मौलिक अधिकार है। सरकार का तर्क था कि इस बारे में कभी भी अदालत ने कोई फैसला नहीं दिया और संविधान में भी इस बारे में स्पष्ट कुछ लिखा नहीं है। उस समय इस मामले की सुनवाई तीन जज कर रहे थे। उन्होंने सरकारी वकील की दलील मान ली और इस पर फैसला लेने के लिए मामले को संविधान पीठ के हवाले कर दिया था। अब मुख्य न्यायाधीश जे एस खेहर की अगुवाई में ६ जजों की संविधान बेंच ने सर्वसम्मति से निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार बताया है। संविधान पीठ ने कहा कि निजता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद २१ के तहत दिए गए जीने के अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हिस्सा है। संविधान पीठ ने १९५४ में एमपी शर्मा मामले में छह जजों की पीठ के और १९६२ में खडग सिंह केस में आठ जजों की पीठ के उस फैसले के उलट ये फैसला दिया है, उन फैसलों में निजता को मौलिक अधिकार नहीं माना गया था। निजता के अधिकार पर अदालत के इस फैसले के कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेंगे। जैसे अब निज लाभ के लिए या दूसरे के अहित की मंशा से किसी की निजी जानकारी प्राप्त कर उसका इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। पैन कार्ड, क्रेडिट कार्ड, बैंक अकाउंट, पासपोर्ट और टिकट बुकिंग के लिए जो निजी जानकारियां दी जाती हैं, उसको कोई भी तीसरा व्यक्ति लीक या फिर सार्वजनिक नहीं कर सकता है। अगर किसी के घर पर छापा मारा जाता है और पुलिस के पास सर्च वारंट है। फिर भी पुलिस सीधे तौर पर उसके घर में नहीं घुस सकेगी। हालांकि अदालत के फैसले में यह कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति बैंक में नया खाता खुलवाने जाता है या फिर पैन कार्ड बनवाता है, तो सरकार या एजेंसियों द्वारा मांगे जाने वाली जानकारी आपको देनी होगी। भारतीय नागरिक किसी भी तरह की जानकारी देने से इंकार नहीं कर सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि निजता को मौलिक अधिकार मानने वाले इस फैसले से आम आदमी की निजता की ही, नहीं आत्म सम्मान की भी रक्षा होगी।

**राष्ट्रीय उद्बोधन**
**चन्द्र प्रकाश कौशिक**
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

# न हम हारे, न तुम

**भारत** और चीन ने एक युद्ध तो देख लिया है, लेकिन अभी दोनों ही देशों की सरकारों को यह बखूबी पता है कि हमारे आपसी हित किस कदर जुड़े हुए हैं। दोनों देशों के आर्थिक संबंध काफी गहरे हैं। हम नारों में भले चीन में बने सामान का बहिष्कार कर लें, हकीकत में ऐसा हो तो भारतीयों के व्यापार को ही बड़ा धक्का पहुंचेगा। चीन में भी स्थिति कमोबेश यही है। आर्थिक संबंधों के अलावा ब्रिक्स, सार्क, शंघाई को आपरेशन आर्गनाइजेशन, जी–२० आदि अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मंचों पर भारत–चीन साथ बैठते हैं, तो तनातनी का लंबा खिंचना, दोनों के लिए सही नहीं होता। यह महज संयोग नहीं हो सकता कि चीन में होने वाली ब्रिक्स बैठक के पहले डोकलाम से दोनों देशों की सेनाएं पीछे हट गईं और तनाव का कूटनीतिक समाधान निकाला गया। इसके पीछे निश्चित ही अंतरराष्ट्रीय दबाव काम कर रहा था। भारत और चीन ने जिस तरह डोकलाम विवाद को सुलझा लिया, उसके लिए यही कहा जा सकता है कि देर आए, दुरुस्त आए। कम से कम हमारे बीच कड़ुआहट घुलने से बच गयी है। अब यह कोशिश होनी चाहिए कि आइंदा कोई विवाद इतना न बढ़ पाए कि बात युद्ध तक जा पहुंचे। हम २१वींसदी में पहुंच चुके हैं और बीती सदियों में युद्धों की विभीषिकाओं के परिणाम देख चुके हैं। दो परमाणु संपन्न देशों के बीच युद्ध जैसे हालात किसी सूरत में नहीं बनने चाहिए, क्योंकि इससे पीढ़ियों की बबार्दी के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। पिछले ७४ दिनों से भारत और चीन के बीच डोकलाम विवाद प्रारंभ हुआ था। डोकलाम पर चीन और भूटान दोनों अपना दावा जताते रहे हैं और जून में चीन ने इस इलाके में सड़क निर्माण प्रारंभ कर दिया था। इस तरह उसने विवादित भूमि पर अपना हक जतलाना प्रारंभ किया। भारत ने भूटान का पड़ोसी और मित्र होने के नाते चीन के इस कार्य का विरोध किया और सड़क निर्माण रोकने के लिए अपने सैनिकों को वहां तैनात किया। चीन ने भी अपना दम दिखाने के लिए सैनिकों की संख्या वहां बढ़ा दी। दोनों देशों में शक्ति के बखान की होड़ लग गई। चीन बार–बार भारत को धमकाता रहा कि वह अपने सैनिक पीछे हटाए, अन्यथा अंजाम भुगतने तैयार रहे। भारत को १९६२ की हार याद दिलाई गई। वहां के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स में लगातार भारत के खिलाफ टिप्पणियां प्रकाशित होती रहीं, यहां तक कि डेरा सच्चा सौदा के गुरमीत को सजा होने और हरियाणा में मचे बवाल तक पर भारत के खिलाफ चीनी मीडिया ने तंज कसा। इधर भारत में भी चीन के खिलाफ खूब माहौल बना। तथाकथित राष्ट्रप्रेमियों ने चीनी सामान के बहिष्कार की मुहिम छेड़ दी। जर्मनी में जी–२० शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने न केवल गर्मजोशी से हाथ मिलाए थे, बल्कि यहीं पर ब्रिक्स देशों के नेताओं की अनौपचारिक बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा की, एक–दूसरे की तारीफ भी की। यानी यह नजर आ रहा था कि दोनों देशों में एक ओर डोकलाम पर तनाव दिखाकर युद्ध और शक्ति प्रदर्शन की बातें हो रही थीं, तो दूसरी ओर परस्पर संबंधों की अहमियत भी दोनों सरकारों को नजर आ रही थी। तो क्या सैन्य ताकत दर्शानें, दिखाने का कोई राजनीतिक मकसद था। भारत और चीन ने एक युद्ध तो देख लिया है, लेकिन अभी दोनों ही देशों की सरकारों को यह बखूबी पता है कि हमारे आपसी हित किस कदर जुड़े हुए हैं। दोनों देशों के आर्थिक संबंध काफी गहरे हैं। हम नारों में भले चीन में बने सामान का बहिष्कार कर लें, हकीकत में ऐसा हो तो भारतीयों के व्यापार को ही बड़ा धक्का पहुंचेगा। चीन में भी स्थिति कमोबेश यही है। आर्थिक संबंधों के अलावा ब्रिक्स, सार्क, शंघाई को आपरेशन आर्गनाइजेशन, जी–२० आदि अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मंचों पर भारत–चीन साथ बैठते हैं, तो तनातनी का लंबा खिंचना, दोनों के लिए सही नहीं होता। यह महज़ संयोग नहीं हो सकता कि चीन में होने वाली ब्रिक्स बैठक के पहले डोकलाम से दोनों देशों की सेनाएं पीछे हट गईं और तनाव का कूटनीतिक समाधान निकाला गया। इसके पीछे निश्चित ही अंतरराष्ट्रीय दबाव काम कर रहा था। भारत में डोकलाम विवाद खत्म होने को बडी कूटनीतिक जीत के रूप में देखा जा रहा है। हमारी राय यह है कि इस मसले के हल को जीत–हार जैसे शब्दों से परे रखना चाहिए। क्योंकि एक की जीत का अर्थ, दूसरे की हार होगी। जबकि यहां न चीन हारा, न भारत जीता, मैच ड्रा रहा। भारत के लिए यह अच्छा रहा कि एक पड़ोसी से युद्ध की बात टल गई। पाकिस्तान के साथ हम यूं ही लगातार तनावपूर्ण माहौल में हैं और चार युद्धों के बाद भी तनाव खत्म नहीं हुआ है। चीन के सामने हम अभी कमजोर नहीं हैं, लेकिन लड़ाई के बाद कुछ और ताकतवर हो जाएंगे, ऐसा भी नहीं है। उधर चीन भी अकारण उलझनें नहीं बढ़ाना चाहेगा। दक्षिण चीन सागर विवाद पर वह पहले ही अमरीका से उलझा हुआ है, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका सब उसकी मदद के तलबगार हैं, फिर वह क्यों भारत से लड़कर अपनी शक्ति जाया करेगा। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि न हम हारे न तुम।

**राष्ट्रीय आह्वान**
**मुन्ना कुमार शर्मा**
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

# पत्ता गोभी एवं पुदीना के औषधीय गुण

बंद गोभी में ऐसे तत्त्व होते हैं जो कैंसर की रोकथाम करने और उसे होने से बचाने में मदद करता हैं। इसमें डिनडॉलीमेथेन (डीआईएम), सिनीग्रिन, ल्यूपेल, सल्फोरेन और इंडोल–३, कार्बीनॉल (१३ सी) जैसे लाभदायक तत्त्व होते हैं ये सभी कैंसर से बचाव करने में सहायक होते हैं।

पत्ता गोभी, शरीर के रोग निरोधक क्षमता को बढ़ाती है। यह अमीनो एसिड से समृद्ध होता है जो सूजन आदि को कम करता है।

पत्ता गोभी के सेवन से मोतियाबिंद का खतरा कम होता है। इसके लगातार सेवन से शरीर में बीटा केराटिन बढ़ जाता है जिससे आँखें स्वस्थ रहती हैं।

पत्ता गोभी में विटामिन भरपूर मात्रा में पाया जाता है जिससे अल्जाइमर की समस्या दूर हो जाती है।

पत्ता गोभी, पेप्टिक अल्सर के इलाज में सहायक होता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अगर पत्ता गोभी का नियमित सेवन करे तो उसे आराम मिल सकता है क्योंकि इसमें ग्लूटामाइन होता है जो अल्सर विरोधी होता है।

पत्ता गोभी एक खास सब्जी है लेकिन इसके सेवन से वजन को भी कम किया जा सकता है। एक कप पकाई पत्ता गोभी में सिर्फ ३३ कैलोरी होती है जो वजन नहीं बढ़ने देती। पत्ता गोभी का सूप शरीर को ऊर्जा देता है लेकिन वसा की मात्रा को घटा देता है।

पत्ता गोभी में काफी ज्यादा मात्रा में एंटी–ऑक्सीडेंट होते हैं जो त्वचा को सही देखभाल करने के लिए पर्याप्त होते हैं।

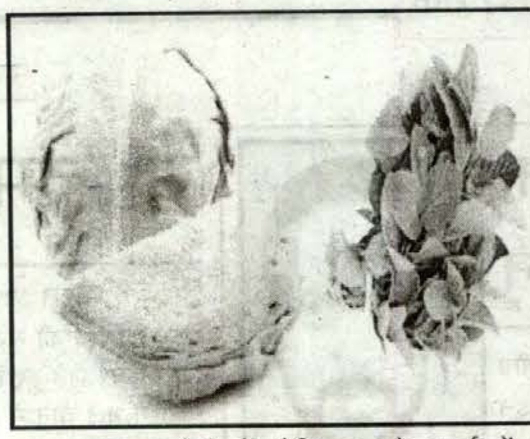

पत्ता गोभी में लैक्टिक एसिड काफी मात्रा में होती है जो मांसपेशियों के चोटिल होने पर उसे जल्दी ठीक करने में काफी सहायक होती है। इसमें बहुत ज्यादा रेशा होता है जिसकी वजह से कब्ज की समस्या कभी नहीं हो पाती। पुदीना मिनरल्स से भरपूर होता है। चटनी हो या आम पेय, पुदीना हर चीज का स्वाद बढ़ा देता है। इसे वायुनाशक दवा के रूप में देखा जाता है। इससे पेट में जलन, उलटी आदि में आराम मिलता है। इसके पत्ते भी चबाकर खाने से पेट दर्द में आराम मिलता है। पुदीना पेट दर्द के अलावा और भी कई रोगों में असरकारक होता है। बुखार व निमोनिया में शहद के साथ पुदीने का रस मिलाकर सेवन करने से फायदा मिलता है।

फेफड़ों व छाती पर जमा कफ को दूर करने के लिए अंजीर को पुदीने के पत्तों के साथ पीसकर सेवन करें, कुछ दिनों में ही जमा कफ दूर हो जाएगा। पुदीने के रस को कान में डालने से कान के कीड़े साफ हो जाते हैं।

गुलाब जल, पुदीने की पत्तियों और नींबू रस को मिलाकर चेहरे पर लगाने से मुंहासे हट जाते हैं। आँखों के नीचे का कालापन दूर करने के लिए पुदीने की पत्तियों को पीसकर उसका लेप आँखों के नीचे लगाएँ।

**साभार संघ प्रवाह**

## व्रतोत्सव प्रदर्शिका

### आश्विन शुक्लपक्ष

| व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव) | तिथि | वार | दिनाँक |
|---|---|---|---|
| ❖ चन्द्रदर्शनमु० ३०, शारदीयनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीअग्रसेनजयन्ती ५१४१ वीं, लग्नसप्तमी, अश्वादिकनीरांजनं, उपाकर्म | १ | वीरवार | २१.०६.२०१७ |
| ❖ मुहर्रम १ हिजरी सन् १४३६ प्रा० शरदसमाप्त्, रवि दक्षिण गोले विषुव दिन र० यो०२४:३७ से | २ | शुक्रवार | २२.०६.२०१७ |
| ❖ भद्रा २४:०१ से, सिन्दूरतृतीया, राष्ट्रीय आश्विन आरम्भः रात्रिदिनं समम् र० यो० स० सि० यो० २६:१५ तक | ३ | शनिवार | २३.०६.२०१७ |
| ❖ भद्रा १२:४० तक, र० यो० २८:२५ से | ४ | रविवार | २४.०६.२०१७ |
| ❖ उपांगललितापंचमीव्रत, स० सि० यो० र० यो० | ५ | सोमवार | २५.०६.२०१७ |
| ❖ र० यो० ०७:०२ तक, मेलामांवनभोरीवाली हिसार सूर्य–सूर्य–स्त्री नपुं० वर्षा वाहन मूषक मध्यवृष्टि | ६ | मंगलवार | २६.०६.२०१७ |
| ❖ भद्रा १६:०६ से, श्री सरस्वती आवाहनम्, दूर्गापूजा प्रारम्भ, नव पद ओली प्रारम्भ (जैन), पुष्करमुनिजयन्ती, विश्व पर्यटन दिवस, र० यो० ०६:५६ तक | ७ | बुधवार | २७.०६.२०१७ |
| ❖ भद्रा ०८:२२ तक, दुर्गाष्टमी, सरस्वती पूजनम् महापूजा, भद्रकाल्यावतारः, शहीद भगत सिंह जयन्ती | ८ | वीरवार | २८.०६.२०१७ |
| ❖ महानवमी अस्त्र–शस्त्रपूजा, सरस्वती बलिदानं दुर्गार्चनं, मन्वाः, नीरांजनपूर्ण, नवरात्रसमाप्त, र० यो० १५:४७ से . | ६ | शुक्रवार | २६.०६.२०१७ |
| ❖ विजयादशमी, दशहरामेला, रावणदाह, अपराजिताशमीपूजा, नीलकण्ठदर्शनं, सीमोल्लंघनं, सरस्वती विसर्जनम्, बौद्धावतारः, माध्वाचार्य जयन्ती, कत्लरात (मुस०), बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबन्दी, रवि योग स० सि० यो० १८:१५ से | १० | शनिवार | ३०.०६.२०१७ |
| ❖ भद्रा १४:१० से २६:४४ तक, रक्तदानदिवस, पापांकुशा एकादशीव्रत स्मार्त वैष्ण–वल्ल्भ, भरतमिलाप, मोहर्रम (ताजिया), र० यो० २०:०८ तक | ११ | रविवार | ०१.१०.२०१७ |
| ❖ पंचक प्रा० ०८:४४, पापांकुशाएकादशी निम्बार्क, श्री गांधी एवं शास्त्री जी जयन्ती | १२ | सोमवार | ०२.१०.२०१७ |
| ❖ प्रदोषव्रत, र० यो० २१:५१ से | १३ | मंगलवार | ०३.१०.२०१७ |
| ❖ भद्रा २५:४७ से, शाकंभरीदेवीदर्शन मेला देवबन्द, पशुकल्याणदिवस, र० यो० २१:३८ तक | १४ | बुधवार | ०४.१०.२०१७ |
| ❖ भद्रा १२:५८ तक अन्वा, श्रीसत्यनारायणव्रत, रासपूर्णिमा, शरद् पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, नवान्नभक्षण, महर्षि बांल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, लक्ष्मीन्द्रयोपूजा, क्षीरशयनोत्सवः, ओलीपूर्ण, अश्वयुजी, ब्रजः–परिक्रमा शुरू–आकाशदीपदानं, वरिष्ठ नागरिक दिवस, स० सि० योग २०:५० से | १५ | वीरवार | ०५.१०.२०१७ |

## जर्सी गायों के पाद से ओजोन लेयर में हो रहा छेद : वैज्ञानिक

**बढ़ते** प्रदूषण की वजह से दुनिया भर के वैज्ञानिक इन दिनों खोज में लगे हैं कि क्लाइमेट चेंज से कैसे निपटा जाए। वहीं इस बारे में गुजरात के जामनगर की आयुर्वेद यूनिवर्सिटी के एक रिसर्चर ने हैरान कर देने वाला दावा किया है। खबर–अनुसार रिसर्चर ने कहा है कि पश्चिमी देशों की गाय की डकारों और पाद के कारण ओजोन लेयर पर बुरा असर पड़ रहा है, वहीं भारतीय देसी गाय ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। गुजरात गोसेवा और गोचर विकास बोर्ड ने इस रिसर्च को करने वाले डॉ. हितेश जानी को गायों से निकलने वाली गैस से पर्यावरण पर पड़ने वाले असर की जाँच करने की जिम्मेदारी दी गई थी। जिस पर डॉ. हितेश ने अपने रिसर्च पेपर में कहा है कि पश्चिमी देशों की गाय ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार है। पंचगव्य चिकित्सा : सदी की दवा' नामक रिसर्च पेपर में डॉ. हितेश ने लिखा है "भारत में हम देसी गायों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते वहीं मोटी जर्सी गाय दिनभर खाती या पीती रहती है।" "जर्सी गाय ज्यादा बीमार होती हैं और उन्हें ऐंटीबायोटिक भी बहुत दी जाती हैं। इन गायों के पाद और डकारों में मीथेन गैस निकलती है जिससे ओजोन लेयर में छेद हो रहा है।" वहीं दूसरी ओर इस पेपर में भारतीय मूल की गायों की पश्चिमी गायों के मुकाबले तारीफ की गई है। रिसर्च पेपर अनुसार पश्चिमी गायों का ए–१ दूध कई बीमारियों का कारण बनता है, वहीं ए–२ देसी गायों का दूध कई बीमारियों के लिए दवाई की तरह है। अमेरिकिन वैज्ञानिक भारतीय गाय जर्सी गाय के ए–१ दूध में ७ ऐमिनो एसिड होते हैं, जो मनुष्य के अंदरूनी अंगों के साथ रिऐक्ट करते हैं। लेकिन ए–२ दूध (भारतीय मूल की गायों का दूध) स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है, जो हमारे प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत करता है। न्यूजीलैंड के एक वेटनरी वैज्ञानिक और प्रोफेसर के अनुसार ए–१ दूध मधुमेह, दिल से जुड़े रोग, ऑटिस्म जैसी बीमारियों का कारण बनता है।

## अमृतरूपी गाय के दूध से एचआईवी एड्स से बचा जा सकता है

**गाय** का दूध शरीर में किसी भी जरूरी तत्त्व की कमी नहीं होने देता है। गाय का दूध हार्ट, डायबिटीज, कैंसर, टी.बी., हैजा और मानसिक रोगों समेत कई बीमारियों में अमृत की तरह काम करता है। गाय का दूध पीना सेहत के लिए फायदेमंद तो है ही, लेकिन गाय के दूध में एक ऐसी खासियत है जो एचआईवी जैसी जानलेवा बीमारी से भी इंसान की रक्षा कर सकता है। मेलबर्न में हुए एक शोध के अनुसार गाय के दूध को आसानी से एक ऐसी क्रीम में बदला जा सकता है जो एचआईवी/एड्स जैसी जानलेवा बीमारी से इंसान की रक्षा करने में मददगार साबित हो सकता है। शोध में गर्भवती गायों पर किए गए एक अध्ययन में यह बात सामने आई है। जब गर्भवती गायों को एचआईवी प्रोटीन का इंजेक्शन दिया गया तो उसने उच्च स्तर की रोगप्रतिरोधक क्षमता वाला दूध दिया जो नवजात बछड़े को बीमारी से बचाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार शोधकर्ता इस दूध को क्रीम में बदलने से पहले उसके प्रभाव और सुरक्षा का परीक्षण करेंगे। यह क्रीम असुरक्षित यौन संबंधों के दौरान एचआईवी के विषाणुओं से बचा सकती है।

# वर्ण व्यवस्था तथा जात-पात का प्रभाव

✍ मामचन्द रिवाड़िया

**प्राचीन** काल में भारतीय अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत श्रम विभाजन के रूप में वर्ण व्यवस्था स्वीकार की गई थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। समाज का यह चतुर्विभाजन कर्म के आधार पर किया गया था। जिसका स्पष्ट निर्देश 'मनु' ने अपने स्मृति ग्रंथ में किया है–

**१. मनु के अनुसार ब्राह्मण के कर्तव्य और गुण निम्न हैं** – पढ़ना–पढ़ाना, यज्ञ करना–कराना, दान लेना और देना ये छः कर्म हैं।

**२. क्षत्रियों के कर्तव्य और गुण निम्न हैं** – न्याय से प्रजा की रक्षा अर्थात पक्षपात छोड़कर श्रेष्ठों का सत्कार और दुष्टों का तिरस्कार करना। विद्या, धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थों का व्यय करना। वेदादि शास्त्रों का पढ़ना और पढ़ाना और विषयों में न फँसकर जितेन्द्रिय रहकर सदा शरीर और आत्मा से बलवान रहना।

**३. वैश्य के कर्तव्य और गुण निम्न हैं** – व्यापार करना, कृषि–पशुपालन करके देशवासियों का भरण–पोषण करना, विद्या–धर्म की वृद्धि करने के लिए धनादि की व्यवस्था करना आदि।

**४. शूद्रों के कर्म** – समाज के सब वर्गों की सेवा करना इनका एकमेव मुख्य कर्तव्य है और इसी सेवा के आधार पर अपना जीवन निर्वाह करना।

मनु महाराज की उपरोक्त उक्तियों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में वर्ण विभाजन गुण–कर्म के आधार पर किया गया था। कोई जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता अपितु कर्म के आधार पर होता है यजुर्वेद के ३१वें अध्याय का ११वाँ मंत्र है। इसमें कहा गया है कि ब्राह्मण अपने गुणों के कारण समाज का मुख होता है। क्षत्रिय अपने रक्षक गुणों के कारण बाहू होता है। वैश्य अपने कृषि आदि कार्यों के कारण समाज का उदर होता है। शूद्र अपने सेवा के कार्यों के कारण पग होता है। जिस प्रकार इन अंगों का शरीर में महत्त्व है उसी प्रकार समाज में इन चारों वर्णों का महत्त्व है।

मनु महाराज ने यह भी लिखा है कि शूद्रकाल में जन्म लेकर अपने कर्म के आधार पर शूद्र, ब्राह्मण–क्षत्रिय, वैश्य भी बन सकता है और ब्राह्मण अपने कर्मों के आधार पर शूद्र भी बन सकता है अर्थात् चारों वर्णों में जिस–जिस वर्णों के पुरुष–स्त्री अपने–अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार होंगे उन्हीं वर्णों में गिने जाएँगे।

इसी तरह का भाव आपत्त धर्म सूत्र में भी व्यक्त किया गया है–धर्माचरण से युक्त वर्ण अपने से उत्तम वर्ण को प्राप्त कर लेता है और वह उसी वर्ण में गिना जाता है जिसके वे योग्य होता है। वैसे भी अधर्माचरण से युक्त उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखा है–ऐसी सुन्दर वर्ण व्यवस्था के रहते हुए भी स्वार्थी एवं अहंकार के वश मदोन्मत्त हुए ब्राह्मणों ने मिथ्य। कल्पना का विस्तार करके नाना प्रकार की जटिलताओं का विकास किया जिसको ब्राह्मणवाद कहते हैं। प्राचीन काल में गुरुकुल के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। चारों वर्णों के बच्चे साथ–साथ गुरुकुल में विद्या प्राप्त करते थे। विद्या प्राप्ति के बाद जो जैसा होता था उसी वर्ण में जाकर अपना कर्तव्य निभाता था। जब से जन्म के आधार पर वर्ण–व्यवस्था कायम हुई है तब से इस देश में विघटन पैदा हो गया है। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर ब्राह्मण दुष्टतापूर्ण कार्य करता है फिर भी ब्राह्मण है किन्तु शूद्र धर्मानुसार यज्ञ–हवन, पठन–पाठन करता है फिर भी शूद्र है। इसी से सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई है।

आज जात–पात ने हमारे देश को पंगु बना दिया है। जात–पात की राजनीति का देश में बोलबाला है। जात–पात के आधार पर ही बड़े–बड़े नेता बन रहे हैं। हर वर्ग इन्हीं राजनेताओं के पीछे बिना विचारे भाग रहा है। समाज उन व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मान नहीं देता जो प्राचीन वर्ण–व्यवस्था पर आज भी कार्य कर रहे हैं। आज सार्वजनिक जीवन में खोटे सिक्कों का चलन इतना अधिक हो गया है कि अब अच्छे सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो वह नकली मालूम पड़ते हैं। आज जो जितना अधिक भ्रष्ट और अपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा वह उतना ही प्रतिष्ठित नेता होगा। जिसके पीछे कोई सम्प्रदाय, जाति, वर्ग होता है उसके संकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान उठक–बैठक लगाते हैं। देश का गद्दार देशभक्ति का उपदेश देता है और विदेशी धन पर पलने वाला स्वदेशी का प्रवक्ता बनता है। देश की अखण्डता को खंडित करने वाले राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार समझे जाते हैं।

वैदिक वर्ण–व्यवस्था ने समाज के सामने यह शर्त रखी थी कि तुम्हारे लिए सम्मान–सत्ता और सम्पदा के अवसर समान रूप से उपलब्ध है तुम स्वयं ही अपना मार्ग चुन लो कि तुम्हें क्या चाहिए? सम्मान चाहिए या सम्पदा का राज–सिंहासन? इस चुनाव करने तक तो व्यक्ति स्वतंत्र रहता था। बाद में यह शर्त रखी थी कि सम्मान उसे मिलेगा जो प्रबुद्ध एवं त्यागी होगा। सभी को त्यागी व्यक्तियों का सम्मान करना होता था क्योंकि वह अपने लिए नहीं जीता था बल्कि समाज के लिए जीता था। जब तक देश में प्राचीन वर्ण–व्यवस्था कायम रही तब तक देश का चरित्र तथा सुन्दर संगठन बना रहा। जब से यह व्यवस्था बिगड़ी तब से देश भी बिगड़ता गया। आज देश में चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। पुनः जाति संघर्ष होने की संभावनाएँ बढ़ गई हैं। चारों तरफ वोट राजनीति ने समाज में विघटन पैदा कर दिया है। दलितों शोषितों पर अत्याचार बढ़ गये हैं। वे सामूहिक रूप से धर्मान्तरण कर रहे हैं। मेरी मान्यता है कि जब धर्मान्तरण होता है तो किसी सीमा तक राष्ट्रीयता भी होती है। रिवाड़ी जिले के कालड़ावास गाँव में दलितों की पिटाई की गई कि वह घोड़ी पर क्यों चढ़े?

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गाँव में हरिजन औरतों की बुरी तरह पिटाई इसलिए हुई कि उन्होंने नंगे होकर नाचने से मना कर दिया था। फतेहपुर शेष पृष्ठ 11 पर

# सोशल मीडिया को रास नहीं आया उपराष्ट्रपति का विदाई भाषण

**श्री हामिद अन्सारी** का १० वर्ष का कार्यकाल १० अगस्त को पूरा हो गया। उससे पहले वे राजदूत भी रहे थे। उन्होंने पद छोड़ते समय ५–७ ऐसी बातें कहीं जिसकी आलोचना सभी दलों ने की। उन्होंने पद की गरिमा का भी ध्यान नहीं रखा।

**प्रतिक्रिया**

१. अन्सारी के दादा मुस्लिम लीग में भी रहे थे जो १९४७ में देश विभाजित कराने में सफल हो गई।

२. बुलन्दशहर में अन्सारी रोड़ के नाम से एक प्रमुख बाजार है। बसपा वालों ने इसका नाम अम्बेडकर मार्ग रखना चाहा जिसका यह कहकर मुस्लिमों ने कड़ा विरोध किया कि स्वर्गीय अन्सारी जी स्वतन्त्रता सेनानी रहे थे इसलिए हम अन्सारी रोड़ का नाम नहीं बदलने देंगे।

३. खण्डित भारत के तथाकथित सर्वश्रेष्ठ संविधान में अल्पसंख्यक किसे माना जाए? और क्यों? इसकी कोई जानकारी नहीं दी गई है।

४. मुर्दा–भोला–अदूरदर्शी–स्वार्थी हिन्दू की शराफत का लाभ उठाते हुए मुस्लिम परस्त नेहरू सरकार ने अंग्रेजों की नीति पर चलते हुए मुस्लिम –ईसाई– सिख–बौद्ध–पारसी के साथ अल्पसंख्यकों जैसा व्यवहार करने लगे अर्थात् उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर अल्पसंख्यक कहने और मानने लगे।

५. कुछ मुस्लिम संगठन ज्ञापन लेकर स्वर्गीय इंदिरा गांधी से मिले और कहा कि उनके साथ सही व्यवहार नहीं हो रहा है। उत्तर में इंदिरा ने कहा कि जिस सम्प्रदाय का प्रतिशत बढ़ रहा है उसे ज्ञापन देने का कोई अधिकार नहीं है।

६. सरदार पटेल ने कहा था कि मुस्लिमों की कार्य पद्धति अर्द्ध सैनिक बलों की भांति है क्योंकि ये संगठित–आक्रामक और शस्त्रों से लैस हैं फिर कोई भी सरकार कैसे इनसे दुर्व्यवहार–भेदभाव और असुरक्षा का अरोप लगवाने का साहस कैसे कर सकती है?

७. हामिद अन्सारी केन्द्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष भी रहे थे। जब इन्हें ज्ञापन देकर मांग की गई कि अल्पसंख्यकों का निर्धारण राज्य स्तर पर होना चाहिए तब इन्होंने अपनी सहमति नहीं दी थी।

८. अन्य देशों में सर्वोच्च सरकारी पदों पर तथा पार्टियों में सर्वोच्च पदों पर चुनाव लड़ने का अधिकार अल्पसंख्यकों को प्रायः नहीं होता है। यही व्यवस्था यहां भी हो जाती यदि हिन्दू महासभा की सरकार जनता ने बनवा दी होती।

९. चूंकि उदारवादियों ने खण्डित भारत को भी धर्मनिरपेक्ष घोषित कर दिया तब तो अखिल भारतीय स्तर पर किसी को भी अल्पसंख्यक घोषित नहीं करना चाहिए था।

१०. अतः देश बचाओ और सावरकरवादी बनो।

**इन्द्रदेव गुलाटी (संस्थापक) एवं राजेश गोयल (महामंत्री) सावरकरवाद प्रचार सभा बुलन्दशहर**

# महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन की १२५वीं जन्मतिथि जयन्ती का देशव्यापी महोत्सव, पौर्वात्य अध्ययन व भारतवेत्ताओं की माँग

✍ हरिकृष्ण निगम

**इसी** वर्ष गत मई २०१७ में प्रसिद्ध भाषाविद्, पौर्वात्य ज्ञान के ख्यातिप्राप्त भारतवेत्ता, पर्यटक एवं लेखक महापंडित कहलाने वाले राहुल सांकृत्यायन की १२५वीं जन्मतिथि देश भर में मनाई गई थी। आर्य जाति की एक महाद्वीपीय ऐतिहासिक यात्रा अथवा यूरेशिया में कथित पलायनका औपन्यासिक रूपान्तरण उनकी अमर कृति 'वोल्गा से गंगा' जो उत्तरापथ सिन्धु नद प्रदेश से दक्षिणापथ व हिमालय भूखंड की उपत्यकाओं को चीरते हुए आर्यों की दस्युओं व द्रविड़ों पर विजय के कथानक के रूप में भी वर्णित है। इस कालखंड के चित्रण में उनके अनुवांशिकी–एन्थ्रोपोलाजी व नृतृत्वशास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन का वह स्वरूप उपलब्ध है जिसने वेदकालीन इतिहास को ई. पूर्व ८००० वर्ष का सिद्ध कर दिया है और बृहत्तर भारत के विषय में देशवासियों को वैज्ञानिक साक्ष्य भी प्रदान किए। अभिलेख इतिहास के उस पक्ष से हम सहमत न भी हों कि आर्य आक्रान्ता थे और उन्होंने द्रविड़ों को हराकर उन्हें अपदस्थ कर दक्षिण में जाने को बाध्य किया था पर या अंग्रेजों को जिसके कारण नस्लवादी देशज इतिहास को थोपने में मदद मिली थी पर उनके इस उपर्युक्त ग्रंथ का फलक इतिहास का वह विशाल कालखंड था जो सहस्राब्दियों से होकर १९४२ तक चित्रित किया गया था।

राहुल सांकृत्यायन का हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय भूमिका पर कोई समझौता पसंद नहीं था और इसलिए तत्कालीन भारतीय वामपंथियों के सभी अंग्रेजी भाषा के परिवेश में पले और बड़े हुए चर्चित नेताओं ने निष्कासित ही कर दिया था और उनकी एक अनामी भारतीय जैसी मौत हुई जो अपने देहावसान के समय पहचान और सारी स्मृतियाँ भी खो चुके थे। इस महान यायावर प्रतिभा का जन्म आजमगढ़ ज़िले के अनामी पिछड़े गाँव पन्दहा में ९ अप्रैल १८९३ में हुआ था और इनका बचपन का नाम केदार पाण्डेय था। माता कुलवन्ती देवी तथा पिता गोवर्धन पाण्डेय की असमय मृत्यु के कारण इनका पालन–पोषण नाना रामशरण पाण्डेय व नानी ने किया। १५ वर्ष की अवस्था में आजमगढ़ से उर्दू में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण कर वे काशी आ गए जहाँ उन्होंने संस्कृत और दर्शन शास्त्र का तथा फिर अयोध्या में वेदान्त का गहन अध्ययन किया। उन्होंने आगरा में अरबी तथा लाहौर में फारसी की पढ़ाई भी की।

उनका विवाह बचपन में ही हो गया था पर अपने घुमक्कड़ स्वभाव के कारण वे उसका निर्वाह नहीं कर सके। तथा उन्होंने घर त्याग दिया। उन्होंने विश्व भर के अनेक देशों का भ्रमण किया जिसमें सोवियत संघ उनके मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ गया था। उन पर आर्य समाज बौद्ध दर्शन एवं मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव पड़ा था। जब वे १९१७ में रूस गए थे तब वहाँ उन्होंने रूसी क्रान्ति का गहन अध्ययन कर उस पर एक ग्रंथ भी लिखा था। बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए उन्होंने चीन, जापान, श्रीलंका और तिब्बत आदि की कष्टपूर्ण जीवट भरी यात्रा भी की। तिब्बत में ल्हासा के अतिरिक दूरदराज के अनेक मठों में उन्हें संस्कृत, प्राकृत, पाली और अन्य भारतीय भाषाओं की पांडुलिपियाँ और ग्रंथ दिखे जो मुगलकाल में जलाए जाने के डर से हिन्दू पण्डितों ने तिब्बत के अन्दरूनी हिस्से के चैत्यों व मठों में छिपाकर रखे थे। इन ग्रंथों व अलभ्य पांडुलिपियों को २२ खच्चरों पर लादकर राहुल सांकृत्यायन अपने खर्च पर भारत में लाए थे जिन्हें पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी, के.पी. जायसवाल इन्स्टीट्यूट, भारतीय इतिहास परिषद के अभिलेखागार, पूना के भण्डारकर इन्स्टीट्यूट में रखा गया था। इसी प्रकार मंगोलिया, चीन व जापान में भारत से बाहर बिखरे हिन्दू, वैदिक और बौद्ध साहित्य के मौलिक ग्रंथों से विश्व का परिचय राहुल सांकृत्यायन ने कराया था जिसे आज भी हमारे सरकारी संस्थान जैसे भुला बैठे हैं जब वे औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गए तभी उन्होंने अपना नाम केदार पाण्डेय से बदलकर राहुल सांकृत्यायन रख लिया।

१९२७–२८ तक श्रीलंका में उन्होंने संस्कृत शिक्षण का कार्य किया। अच्छे लेखक और विचारक होने के बाद भी वे कभी प्रत्यक्ष सामाजिक सक्रियता दिखाने में पीछे नहीं रहे। भारत आकर वे किसान आन्दोलन में कूद पड़े। वे "अखिल भारतीय किसान सभा" के महासचिव भी रहे। उनका मत था कि अंग्रेजों की शह पर पल रहे सामंतवाद और पूँजीवाद अथवा कुलकलाबी के गठजोड़ को तोड़े बिना किसानों की दशा नहीं सुधारी जा सकती है। १९२१ में वे गाँधी जी के साथ जुड़ गए और १९३१ में एक बौद्ध मिशन के साथ यूरोप की यात्रा पर गए। १९३७ में रूस ने उन्हें प्राचीन साहित्य के अध्ययन के लिए बुलाया। भारत आकर १९४२ में वे भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण जेल भी गए थे। जैसा ऊपर इंगित किया है राहुल जी हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, तमिल, कन्नड़, पाली, अंग्रेजी, जापानी, रूसी, तिब्बती और फ्रेंच भाषाओं को बोलने के साथ–साथ उनमें साधिकार लिखते भी थे। इसके बावजूद वे हिन्दी के प्रति अपने विशेष लगाव को कभी नहीं छिपाते थे और उस समय के अधिकांश अंग्रेजी के ज्ञाता वामपंथी इस कारण उनकी उपेक्षा करने से नहीं चूकते थे। हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा के कारण उन्होंने कम्यूनिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दिया पर बाद में ज्योति बसु तक कहते रहे कि हम लोगों ने उन्हें निष्कासित किया था, त्यागपत्र की बात असत्य हैं १९४७ में मुम्बई में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे निर्विवाद सभापति चुने गए थे।

उन्होंने कहानी, उपन्यास, पौराणिक व वैदिक आख्यानों के अलावा इतिहास, राजनीति दर्शन, उपनिषदों के कथाओं पर लगातार विवेचन ग्रंथ लिखे थे और स्वयं अनेक भाषाओं में उनके अनुवाद प्रकाशित करवाये। स्वयं काशी के पण्डित और अंतर्राष्ट्रीय भारतीय पौर्वात्य अध्ययन के संगठनों ने उन्हें "महापण्डित" की पदवी दे रखी थी। भारत में उन्हें "पदम भूषण" से अलंकृत किया गया था और "साहित्य अकादमी" का पुरस्कार भी दिया गया था। उनकी रूसी पत्नी और पुत्र "राहुलोविच" यद्यपि सुर्खियों में रहे थे। १४ अप्रैल १९६३ में उनके दिवंगत होने के बाद लगता है कि भारत ने मात्र उनके राजनीतिक पृष्ठभूमि के कारण उन्हें भुला दिया गया है। १९५९ में वे दर्शन शास्त्र के महाचार्य के नाते श्रीलंका गए थे पर १९६१ में सहसा उनकी स्मृति खो गई थी। इसी दशा में १४ अप्रैल १९६३ में उनका देहावसान हो गया था।

राहुल सांकृत्यायन स्वामी दयानन्द को भारतीय इतिहास का दीप स्तम्भ एवं युगपुरुष मानते थे। चाहे मध्य एशिया के दुर्गम क्षेत्र हों, समकरन्द, ताशकंद हो या लद्दाख, नेपाल, भूटान या रेशम महामार्ग के साथ–साथ मंगोलिया के उलाने बटोर जैसे क्षेत्र हों वे सीमित साधनों के बाद भी कष्टपूर्ण यात्रा ज्ञान की खोज के लिए करते थे। चाहे रूस के लोमोसोनोव विश्वविद्यालय, लेनिनग्राड अथवा पैट्रिस लुलुमा विश्वविद्यालय हो उनके लिए सभी के द्वार खुले रहे थे जहाँ वे विद्वत मण्डली का दुर्लभ सम्मान पाते थे। आज यदि साम्यवादी दल के महासचिव सुधाकर रेड्डी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से आग्रह करते हैं कि राहुल जी की जन्मतिथि की १२५वीं जयन्ती देश भर में भव्य रूप में मनाई जाए तो उसका देशव्यापी समर्थन स्वाभाविक होगा।

देशभक्ति और राष्ट्रवाद का विपणन मात्र नारों से नहीं बल्कि देश के ताने–बाने को सुदृढ़ बनाने वाले युगपुरुषों के अवदान को सतत स्मृति में बसाने के बिना संभव नहीं है। मात्र छदम सेकुलरवादियों के हर असमंजस को ढोते रहने से यह कदापि सम्भव नहीं है। राहुल जी अपने वक्तव्यों में कई बार लिख चुके थे कि भारतीय इतिहास–लेखन में जिज्ञासा कम दुराग्रह अधिक है और साम्यवादियों के साथ खड़े होने पर भी नेहरू गाँधी दोनों के राजनीतिक पक्षपात से पूर्ण रूप से अवगत थे। यह एक सच है कि रूसी क्रान्ति के समय में या बाद तक वहाँ और भारत में भी ऐसे लेखक, कवि व चिन्तक रहे थे जो राजनीतिक विचारधाराओं के हर इस्पाती ढाँचे से ऊपर उठकर सृजन करते थे जो तत्कालीन दबावों से परे मानव केन्द्रित रहता था। उन पर शीत युद्ध के अंतर्राष्ट्रीय माहौल का भी कोई असर नहीं दीखता था। राहुल जी का वोल्गा से गंगा का मिलन को ऐसी पृष्ठभूमि के सांचे में देखना चाहिए जो सच में सही प्रगतिशील लेखन से उपजी कृति थी। प्रेमचन्द जी के कथा–साहित्य को भी इसी चश्मे से देखा जाता रहा है जहाँ मानववाद के आग्रह की गहरी जड़ें सर्वत्र दीखती थीं। रूसी समाज में सदैव ऐसे लेखकों को विशेष स्थान दिया जाता रहा है। ताल्स्ताय, गोर्की, तुर्गनवे, चेखोव, दास्तावेस्की, इलिया, एहरेनबुर्ग, पुश्किन आदि रूस में हर प्रकार के अतिरेकी राजनीतिक चश्मे से प्रशासन द्वारा देखने के बाद भी समाहत किए जाते थे। राहुल सांकृत्यायन इसी परम्परा के संवाहक के रूप में भारत की आत्मा के व्याख्याता के रूप में देखे जाते थे। भारतीय विश्वासों की अविच्छिन्न धारा के सूत्रधार के रूप में राहुल सांकृत्यायन आधुनिक विश्व में सदैव एक अनूठे स्थान के हकदार माने जाएँगे।

# नासूर बनता बांग्लादेशी घुसपैठियों का आतंक

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

**बांग्लादेशी** मुस्लिम घुसपैठियों के आतंक की अनेक दर्दनाक घटनाओं के समाचार आते रहते है। इसी संदर्भ में एन.सी.आर. के आधुनिक नगर नोएडा में १२ जुलाई को घटित अराजक घटना का कुछ विवरण यह है कि नोएडा के सेक्टर ७८ की महागुन मार्डन सोसाइटी में अपनी पत्नी हर्षिता सेठी व एक आठ वर्षीय बेटे के साथ मर्चेंट नेवी के एक कैप्टन मितुल सेठी रहते है। उनके यहां दिसम्बर २०१६ से एक जोरा बीबी नामक ३० वर्षीय बांग्लादेशी मुस्लिम महिला घरेलू काम करती आ रही है/थी। परंतु उनके घर से पिछले २–३ माह से १–२ नोट व कुछ और छुटपुट वस्तुऐं गायब होने लगी थी। जब १–२ दिन पहले दस/सत्रह हजार रुपये चोरी हुए और उसका आरोप नौकरानी पर लगा कर पूछताछ की तथा पुलिस में शिकायत की बात करी तो वह वहां से भाग कर किसी अन्य टावर के फ्लैट में बीमारी का बहाना कर छिप गई। रात भर जब जोरा अपने घर नही पहुँची तो उसके पति अब्दुल ने पुलिस में इसकी सूचना दी। यह बात अन्य काम करने वाले उस बस्ती के सभी घरेलू नौकर व नौकरानियों को पता चल गई। जिसके फलस्वरूप १२ जुलाई को प्रातः ६ बजे जोरा का पति बस्ती से सैंकड़ो लोगों की भीड़ लेकर इस सोसाइटी में पहुँचा और पूरी भीड़ ने वहां घंटों आतंक मचाया। सोसायटी के सारे निवासी घबराहट में अपने अपने फ्लैटों से बाहर नही निकले और इस प्रकार उन्मादी भीड़ घरों में लूटमार व तोड़फोड़ करने में लग गई जो कि इन धर्मांधों के लिए सामान्य बात है। लेकिन कैप्टन सेठी तो इतने अधिक घबरा गये कि उन्होंने अपने को व परिवार को बाथरुम में छिपा कर बचाया। वहां के लोगों को किसी अपराधी के पक्ष में खड़े होकर इस तरह की अराजकता का कोई आभास ही नही था। वैसे इस कांड से शिक्षा लेते हुए कुछ सोसाइटी वालों ने झुग्गियों में रहने वाले बंग्लादेशियों से काम न कराने का निर्णय किया।

परंतु यह घटना सामान्य नही है। आप सभी को स्मरण होगा कि २३ मार्च २०१६ की रात को विकासपुरी, दिल्ली में भारत–बंग्लादेश के बीच हुए क्रिकेट मैच में भारत की जीत पर दिल्ली निवासी डॉ० पंकज नारंग द्वारा जश्न बनाये जाने के बाद उपजे एक छोटे से विवाद पर कुछ धर्मान्धों ने उनको दर्दनाक मौत दी थी। क्या वह अकस्मात था? नहीं, वह जिहादी मानसिकता की उपज थी। इसी प्रकार नोएडा में हुए इस हिंसक प्रदर्शन को धर्मान्धों का जिहाद कहना गलत नही होगा? केवल बम विस्फोटो द्वारा ही जिहाद नही होता, यह भी उसी का एक रुप है।

वास्तविकता यह है कि दिल्ली के पास होने के कारण नोएडा व गाजियाबाद आदि आतंकवादियों की शरण स्थली बना हुआ है। धनी मुस्लिम बस्तियां विशेष रुप से बंग्लादेशी घुसपैठिये इनको सहारा देते है और ये स्वयं भी विभिन्न अपराधों व आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहते है। वैसे तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद सहित मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, अलीगढ़, जेपी नगर, बुलंदशहर व आगरा आदि अनेक नगरों में गुप्तचर विभाग का ब्योरा जांचा जाय तो अनेक जिहादी संगठनों के सक्रिय एजेंट ऐसी बस्तियों में मिल सकते है। पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. का नेटवर्क भी इन क्षेत्रों में अधिक सक्रिय हो तो कोई आश्चर्य नही? हमें यहां यह अवश्य ध्यान देना चाहिये कि वर्षो से बंग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों की झुग्गीयां व अन्य घनी मुस्लिम बस्तियों में आतंकियों और अपराधियों को पकड़ने व जाँच पड़ताल करने के लिए जाने वाली पुलिस पर ये लोग आक्रामक हो जाते है, जिससे प्रशासन इनके विरुद्ध कोई भी वैधानिक कार्यवाही करने में असमर्थ होता है। अतः देश में सक्षम कानून व्यवस्था होने के उपरांत भी सामान्यतः इन क्षेत्रों में मुस्लिम एकजुटता व हिंसक मानसिकता के भय से सुरक्षाकर्मी जाने से बचते ही नही घबराते भी है, जोकि सामान्य जन को भी स्वीकार नही। आखिर ऐसी विकट परिस्थिति में कानून का राज्य प्रभावहीन क्यों होता है एक गंभीर समस्या बनती जा रही है? परंतु अपने कुछ आर्थिक लाभ व सत्ता सुख के लिए इनके पहचान पत्र,

राशन कार्ड, पासपोर्ट व आधार कार्ड आदि बनवाने में हमारे अधिकारियों व नेताओं की भागीदारी को नकारा नही जा सकता। अतः इन बंग्लादेशी मुसलमानों की गतिविधियों की सघन जांच होनी चाहिये और संभव हो सकें तो वापस इनको वापस बांग्लादेश भेजने की व्यवस्था होनी ही चाहिए। आज नही तो कल दिल्ली सहित अनेक नगरों में इस प्रकार की आतंकी घटनाएं बढ़े तो अतिश्योक्ति नही होगी? जबकि पश्चिम बंगाल, आसाम व बिहार आदि में तो इनका हिंसात्मक तांडव थमने का नाम ही नहीं लेता। वहां की राजनीति में इन घुसपैठियों की भूमिका धीरे धीरे विराट रुप लेने से राज्य सरकारों के गठन में इनकी सक्रियता बढ़ना राष्ट्रघाती हो रहा है। सामान्यतः हम अपने शत्रुओं को पहचानते ही नही और उन्हें अपने घरों, कार्यालयों फैक्टरियों आदि में बड़ी सरलता से नौकरी भी देते है। फलस्वरुप कुछ वर्ष पूर्व के समाचारों के अनुसार लगभग १५ हजार करोड़ रुपया प्रति वर्ष भारत में बसे ये घुसपैठिये बंग्लादेश भेजते आ रहे है। क्या बंग्लादेशी नौकरों और भारतीय स्वामियों का यह संघर्ष हिन्दू समाज व राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये क्या कोई सार्थक संदेश दे पायेगा? हिंदुओं की सहिष्णुता, उदारता व शांतिप्रिय अहिंसक मानसिकता इन मुस्लिम जिहादियों की हिंसात्मक आपराधिक प्रवृत्ति पर अंकुश लगा पायेगी? जबकि हम सभी को मानव समझते है, परंतु इस्लाम में गैर मुस्लिम काफिर होता है। उसके विरुद्ध कोई भी अपराध उनके धर्म में क्षमा योग्य है और उन्हें ऐसा करने से जन्नत मिलती है। अतः जब उनका उद्देश्य स्पष्ट है तो वह तो अवसर ढूंढ कर आघात करेंगे ही। उनका संख्याबल व उनकी शेष पृष्ठ 11 पर

# भारत ने जीती डोकलाम की बाजी, चीन की चाल पस्त

**लगभग** तीन महीने से चला आ रहा भारत और चीन के बीच सिक्किम के डोकलाम में गतिरोध समाप्त हो गया है। दोनों देश डोकलाम से अपनी–अपनी सेनाएं हटाने के लिए तैयार हो गए हैं। अब तक चीन कह रहा था कि भारत डोकलाम से पहले अपनी सेना हटा ले, उसके बाद ही कोई बातचीत होगी। भारत का कहना था कि दोनों देश एक साथ अपनी सेना वापस बुलाएं, उसके बाद वार्ता संभव है। चीन ने आखिरकार भारत की यह बात मान ली है। मामला तब शुरू हुआ जब भारत ने डोकलाम में चीन के सड़क बनाने की कोशिश का विरोध किया। इस पर चीन भड़क गया। सरकार संचालित चीनी मीडिया में भारत को युद्ध की धमकी तक दी गई। भारतीय मीडिया में चाहे जो भी कहा गया हो, पर भारत सरकार ने संयमित बयान दिए। फिलहाल इस बात को लेकर बहस बेकार है कि चीन भारत की कूटनीति के आगे झुक गया या यह उसकी कोई सोची–समझी चाल है। कुछ विशेषज्ञ कह रहे हैं कि उसका यह फैसला एशिया–प्रशांत क्षेत्र में उसके प्रभाव को कम करेगा। इसका परिणाम चाहे जो भी हो, लेकिन चीन ने यह फैसला करते हुए मौजूदा हालात को ध्यान में रखा है। वह एक साथ कई मोर्चों पर नहीं उलझना चाहता। दक्षिणी चीन सागर को लेकर अमेरिका से उसका तनाव बहुत बढ़ गया है। ऐसे में भारत से तनाव जारी रखना उसके लिए घाटे का सौदा हो सकता था। उसके व्यापारिक और निवेश हित भारत के साथ काफी गहरे हो चुके हैं। इस मोर्चे पर होने वाला कोई भी नुकसान चीनी अर्थव्यवस्था के लिए समस्या पैदा कर सकता था। वैसे भी अगले महीने चीन में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन होने जा रहा है। इस पर डोकलाम विवाद की छाया चीन के लिए हर लिहाज से नुकसानदेह होती। जो भी हो, इस फैसले से दोनों मुल्कों की जनता को राहत मिली है। दो परमाणु शक्ति संपन्न ताकतवर पड़ोसियों के बीच इस तरह तनाव बने रहना खुद में एक असाधारण मामला था। यह दुनिया की एक बड़ी आबादी को हर समय मौत के जबड़े में रखने जैसा था। पिछली सदी में यूरोप में इस तरह के हालात विश्वयुद्धों का सबब बन चुके हैं। लेकिन अभी राष्ट्रों के आपसी संबंधों का मुहावरा बदल गया है। खुद भारत और चीन आज हजारों मजबूत धागों से एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। दोनों के बीच का सीमा विवाद भी ऐसा नहीं है कि रोजमर्रा का जीवन उससे प्रभावित होता हो, या उस पर दोनों देशों का बहुत कुछ दांव पर लगा हो। यह ऐसा मसला है जिस पर शांति और सौहार्द के माहौल में बात होती रह सकती है। सामरिक दृष्टि से चाक–चौबंद रहने का हक भारत और चीन दोनों को है, लेकिन जिम्मेदार राष्ट्र होने के नाते दोनों के ऊपर क्षेत्र में अमन–चैन बनाए रखने की जवाबदेही भी है।

**ललित मैनी**

# हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

**पैगम्बर और उनकी मध्यस्थता**

**मुझे लोगों से तब तक युद्ध करते रहने का (अल्लाह से) आदेश मिला है जब तक कि वह सत्यापित न करने लगें कि अल्लाह के अतिरिक्त दूसरा कोई उपास्य नहीं है और मुझ में अल्लाह का रसूल (संदेशवाहक) होने के नाते और उस सब में जो मेरे द्वारा लाया गया है, विश्वास न करने लग जायें।(स० मु०३१)**

अतीत में अनेक लोगों ने अपनी महत्वकांक्षा, स्वार्थ एवं अन्य कारणों से आने वाली पीढ़ियों को बांधे रखने के लिये अनेक उपाय किये हैं, उन्ही उपायों में से एक मुहम्मद के उपाय हैं– **स्वयं को पैगम्बर घोषित कर, अपनी राष्ट्रीय भावनाओं के कारण एक विशेष नई संस्कृति से बांधकर, अरब के राष्ट्रीय हित के लिये उन्होंने मानव-जाति को जितनी हानि पहुँचाई, इतनी किसी प्राकृतिक आपदा ने भी नहीं पहुँचाई। उन्हें हत्या, लूट, बलात्कार, अपहरण, अत्याचार, छल-कपट, विश्वासघात सब न्यायपूर्ण और नैतिक लगते हैं। सिर्फ लगते ही नहीं, वे उनका कट्टरतापूर्ण ढंग से पालन करते हैं। अपने आसपास के काफिरों (गैर-मुसलमानों) को अपनी कपट योजना की भनक भी नहीं लगने देते और समय अनुकूल होते ही उनका नाश कर डालते हैं।**

मध्यस्थता एक प्रकार से न्याय–व्यवस्था का खुला उल्लंघन है, यह अन्याय का मुख्य साधन और सबसे बड़ा अपराध है क्योंकि यह सबसे न्यायकारी अल्लाह को किसी सन्त या पैगम्बर की प्रार्थना पर निष्पक्षता के नियमों की विपरीत दिशा में झुकने को विवश करता है। यह तो न्याय की अवधारणा के प्रति पूरी धूर्तता और खुल्लम–खुल्ला मजाक है।

मध्यस्थता के परिणामस्वरूप बलात्कारियों, हत्यारों, चोरों, धोखेबाजों, लुटेरों, ठगों, दगाबाजों आदि को भर 'जन्नत' से पुरस्कृत किया जायेगा। ये तो वो लोग हैं, जो कि 'जहन्नम' के योग्य हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तब तो ईश्वर, पैगम्बरों, संतों, पवित्रता, धर्मपरायणता, न्याय आदि की समस्त अवधारणाएं एक धोखेबाजी मात्र प्रतीत होती हैं और उसकी निन्दा की जानी चाहिए, क्योंकि मध्यस्थता मानव प्रतिष्ठा का मजाक उड़ाती है।

'मध्यस्थता' जोड़–तोड़ और षड्यंत्र करने का एक दूसरा नाम है।

क्योंकि जीवन की निराश इच्छाओं की मृत्योत्तर जीवन में उनकी पूर्ति के लिए वे पैगम्बर को ही एकमात्र माध्यम मानते हैं, अतः वे उसके नाम पर नैतिकता के बारे में बिना सोचे कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। विवेक की मांग के बारे में चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है, जबकि केवल अनैतिकता की शक्ति के माध्यम से मुक्त की गारंटी हो सकती है।

**''अल्लाह' और 'रसूल' की आज्ञा पालन करने वाले के लिए जन्नत है और जो उसकी अवज्ञा करेगा, उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा।''** (४:१३-१४, पृ. २२३)

**''जिसने 'रसूल' की आज्ञा का पालन किया, उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया।''** (४:८०, पृ. २३५)

अल्लाह वही करता है, जोकि पैगम्बर के अनुकूल होता है और उसके कारिंदे के समान कार्य करता है। उदाहरण के लिए–कुरान (४:३, पृ० २२०) के अनुसार–**एक मुसलमान एक समय में ४ बीवियां रख सकता है। लेकिन अल्लाह ने अपने इस नियम को मुहम्मद के लिए तोड़ा और मुहम्मद को अधिकार दिया कि वह ८ (और इससे भी अधिक) बीवियाँ रख सकता है।**

हम समझ सकते हैं कि मुहम्मद के प्रति प्यार अल्लाह से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण क्यों हो गया। हदीस कहता है– **''कोई भी व्यक्ति इस्लाम का सच्चा अनुयायी तब तक नहीं होता है, जब तक कि मैं (मुहम्मद) उसे अपने परिवार वालों, उसकी सम्पत्ति और समस्त मानव जाति से भी ज्यादा प्यारा न होऊं। ''मुस्लिम, खंड १:७०, पृ. ३७)**

धीरे –धीरे मुहम्मद अपने को अल्लाह से भी अधिक प्रतिष्ठित कर लेते हैं।

वास्तव में वे मुहम्मद की पूजा करते हैं, लेकिन दिखावे कि लिए वे अल्लाह के सामने झुकते हैं।

मुसलमानों का विश्वास है कि 'न्याय के दिन' मुहम्मद, अल्लाह के साथ न्याय के सिंहासन पर अल्लाह के साथ होंगे। कुरान कहता है कि –''निस्संदेह वह एक आदरणीय संदेशवाहक (फरिश्ते) की (पहुंचाई हुई) बात है जो शक्तिशाली है, सिंहासन के स्वामी के यहाँ बड़ा ही मरतवे वाला है, वहाँ उसकी बात मानी जाती है।''(८१:१९–२१, पृ. ११३२)

यह सोचना तर्कपूर्ण है कि मनुष्य होने के नाते मुहम्मद के साथ भी वही भौतिक अवस्थाएं लागू होंगी, जो कि संसार के अन्य लोगों के साथ होती हैं। क्योंकि **वह भी इस दुनिया में जन्मे थे और अन्य लोगों के समान उनका लालन-पालन हुआ था, उन्हें भी भूख-प्यास लगती थी, वह भी बीमार हुए थे, उनकी भी दवाई-दारू व उपचार हुआ था, उनके भी पत्नियाँ थी, उन्हें भी सैक्स की आवश्यकता थी, उनका भी अन्य मरणशीलों के समान निधन हुआ था और उन्हें भी गाड़ा गया था। (१८:११०, पृ. ४४१:१७:६३ पृ. ५२०)**

रिवीलेशन या 'खुदाई इलहाम' (वही, नबूवत, रियालात) एक ऐसी सेमेटिक चाल है, जोकि किसी मनुष्य को परमेश्व के समान पूजे जाने योग्य बना देती है।

मुहम्मद सेवक नहीं स्वामी हैं, 'इलहाम' का वास्तविक उद्देश्य भी यही है। जीजस क्राइस्ट भी एक पैगम्बर थे, मगर अन्त में वह परमेश्वर के समान बन गये, यही बात मुहम्मद के विषय में सच है।

परमेश्वर के सेवक के रूप में विवशतावश काम करने की कल्पना 'इलहाम' के उपाय का केन्द्र है।

मुहम्मद लोगों पर अपनी कबर से शासन करना चाहते हैं और केवल अकेले स्वयं को ही पूजा जाना चाहते हैं। क्योंकि वह लोगों को सावधान करते हैं कि वह आखिरी पैगम्बर हैं और यदि कोई अन्य उसके बाद अपने को परमेश्वर के 'रसूल' होने का दावा करता है तो वह एक धोखेबाज के अलावा और कुछ नहीं होगा। फिर किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के बाद उसका याद किया जाना और पूजा जाना सम्भव नहीं है।

'इलहाम' के सैमिटीय सिद्धांत के अनुसार– **एक पैगम्बर चाहता है कि उसे परमेश्वर कहे जाए बगैर, परमेश्वर के समान माना जाए।** वह एक राष्ट्रीय नायक भी होता है क्योंकि वह अपने नाम को आगे चलाए जाने के लिए समर्पित अनुयायियों का एक समूह तैयार करना चाहता है। **लोगों को यह सदैव याद रखना चाहिए कि ''इस्लाम एक मजहब कम, एक अरब राष्ट्रीय आन्दोलन अधिक है।''**

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पैगम्बर अपने कुरैश कबीले को अन्य कबीलों में सर्वोत्तम मानते थे। यही कारण है कि उन्होंने यह नियम बनाया कि शासन करने का अधिकार केवल कुरैशों को है।

पिछली अनेक सदियों से विद्वान लोग और सामान्य जनता यही समझती रही कि 'न्याय के दिन' का अर्थ है कि अल्लाह अपने न्याय के सिंहासन पर बैठेगा और पैगम्बर मुहम्मद उसके दाँई तरफ बैठेंगे। अल्लाह मध्यस्थता करने सम्बंधी अपने सभी अधिकार मुहम्मद को देगा जो यह तय करेंगे कि किसी व्यक्ति को जन्नत में जाना चाहिए या जहन्नम में।

**न्याय का आधार व्यक्ति के कर्मों की गुणवत्ता पर नहीं बल्कि इस बात पर होगा कि किसने मुहम्मद को सबसे अधिक प्यार किया है।** यहूदी लोग तो जहन्नम की तरफ लाइन लगाएंगे तथा ईसाईजन इनके पीछे होंगे। हिन्दू, बौद्ध, तटस्थेश्वरवादी (डीस्ट्स), नास्तिक और अन्य सभी समान रूप से दुखी होंगे। **सभी हत्यारें, बलात्कारी, लुटेरे, अग्निवाहक, धोखेबाज, ठग, अकड़बाज आदि में से जिस किसी ने अपने जीवन में एक बार भी यदि प्यारपूर्वक मुहम्मद का नाम ले लिया और उसकी पैगम्बरी में विश्वास किया,, वह निश्चय ही जन्नत को जाएगा। जहाँ कि अल्लाह की उदारता की प्रशंसा करने के फलस्वरूप हर एक पुरुश को ७० सुन्दर कुवाँरियाँ और अनेक आकर्षक युवक मिलेंगे तथा उसकी वीर्यवत्ता या पुरुषत्व १०० गुनी बढ़ा दी जाएगी। (तिरमिजी) मसाहिब अल हदीस, खंड ४:४२:२४, पृ. १६८)**

**किसी भी राष्ट्रीय नेता ने इतनी देशभक्तिपूर्ण योजना नहीं सुझाई है जितनी कि मुहम्मद ने 'हज्ज' की। उसका अरेबिया को हुए लाभ की महानता को इसी बात से जाँचा जा सकता है कि आज के युग में मक्का सारे विश्व से प्रतिवर्ष कम से कम २० लाख हाजियों को आकर्षित करता है। यह मानते हुए कि प्रत्येक यात्री लगभग ३००० स्टर्लिंग पौंड खर्च करता है। इससे अरेबिया को लगभग**

शेष पृष्ठ 11 पर

# योगी आदित्य नाथ कौन हैं

**साभार नई सदी पॉइन्ट**

**जब** सम्पूर्ण पूर्वी उत्तर प्रदेश जेहाद, धर्मान्तरण, नक्सली व माओवादी हिंसा, भ्रष्टाचार तथा अपराध की अराजकता में जकड़ा था उसी समय नाथपंथ के विश्व प्रसिद्ध मठ श्री गोरक्षनाथ मंदिर गोरखपुर के पावन परिसर में शिव गोरक्ष महायोगी गोरखनाथ जी के अनुग्रह स्वरूप माघ शुक्ल ५ संवत २०५० तदनुसार १५ फरवरी सन् १९९४ की शुभ तिथि पर गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी का दीक्षाभिषेक सम्पन्न किया।

योगीजी का जन्म देवाधिदेव भगवान् महादेव की उपत्यका में स्थित देव-भूमि उत्तराखंड में ५ जून सन १९७२ को हुआ। शिव अंश की उपस्थिति ने, छात्ररूपी योगी जी को शिक्षा के साथ-साथ सनातन हिन्दू धर्म की विकृतियों एवं उस पर हो रहे प्रहार से व्यथित कर दिया। प्रारब्ध की प्राप्ति से प्रेरित होकर आपने २२ वर्ष की अवस्था में सांसारिक जीवन त्यागकर संन्यास ग्रहण कर लिया। आपने विज्ञान वर्ग से स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की तथा छात्र जीवन में विभिन्न राष्ट्रवादी आन्दोलनों से जुड़े रहे।

आपने संन्यासियों के प्रचलित मिथक को तोड़ा। धर्मस्थल में बैठकर आराध्य की उपासना करने के स्थान पर आराध्य के द्वारा प्रतिस्थापित सत्य एवं उनकी सन्तानों के उत्थान हेतु एक योगी की भाँति गाँव-गाँव और गली-गली निकल पड़े। सत्य के आग्रह पर देखते ही देखते शिव के उपासक की सेना चलती रही और शिव भक्तों की एक लम्बी कतार आपके साथ जुड़ती चली गई। इस अभियान ने एक आन्दोलन का स्वरूप ग्रहण किया और हिन्दू पुनर्जागरण का इतिहास सृजित हुआ।

अपनी पीठ की परम्परा के अनुसार आपने पूर्वी उत्तर प्रदेश में व्यापक जनजागरण का अभियान चलाया। सहभोज के माध्यम से छुआछूत और अस्पृश्यता की भेदभावकारी रूढ़ियों पर जमकर प्रहार किया। वृहद् हिन्दू समाज को संगठित कर राष्ट्रवादी शक्ति के माध्यम से हजारों मतान्तरित हिन्दुओं की ससम्मान घर वापसी का कार्य किया। गोरक्षा के लिए आम जनमानस को जागरूक करके गोवंशों का संरक्षण एवं सम्वर्धन करवाया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में सक्रिय समाज विरोधी एवं राष्ट्रविरोधी गतिविधियों पर भी प्रभावी अंकुश लगाने में आपने सफलता प्राप्त की। आपके हिन्दू पुनर्जागरण अभियान से प्रेरित होकर गाँव, देहात, शहर एवं अट्टालिकाओं में बैठे युवाओं ने इस अभियान में स्वयं को पूर्णतया समर्पित कर दिया। बहुआयामी प्रतिभा के धनी योगी जी, धर्म के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्र की सेवा में रत हो गये।

अपने पूज्य गुरुदेव के आदेश एवं गोरखपुर संसदीय क्षेत्र की जनता की माँग पर आपने वर्ष १९९८ में लोकसभा चुनाव लड़ा और मात्र २६ वर्ष की आयु में भारतीय संसद के सबसे युवा सांसद बने। जनता के बीच दैनिक उपस्थिति, संसदीय क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले लगभग १५०० ग्रामसभाओं में प्रतिवर्ष भ्रमण तथा हिन्दुत्व और विकास के कार्यक्रमों के कारण गोरखपुर संसदीय क्षेत्र की जनता ने आपको वर्ष १९९९, २००४ और २००९ के चुनाव में निरन्तर बढ़ते हुए मतों के अन्तर से विजयी बनाकर चार बार लोकसभा का सदस्य बनाया।

संसद में सक्रिय उपस्थिति एवं संसदीय कार्य में रुचि लेने के कारण आपको केन्द्र सरकार ने खाद्य एवं प्रसंस्करण उद्योग और वितरण मंत्रालय, चीनी और खाद्य तेल वितरण, ग्रामीण विकास मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, सड़क परिवहन, पोत, नागरिक विमानन, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालयों के स्थायी समिति के सदस्य तथा गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और अलीगढ़ विश्वविद्यालय की समितियों में सदस्य के रूप में समय-समय पर नामित किया।

व्यवहार कुशल, दृढ़ता और कर्मठता से उपजी आपकी प्रबन्धन शैली शोध का विषय है। इसी अलौकिक प्रबन्धकीय शैली के कारण आप लगभग ३६ शैक्षणिक एवं चिकित्सकीय संस्थाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, प्रबन्धक या संयुक्त सचिव हैं।

हिन्दुत्व के प्रति अगाध प्रेम तथा मन, वचन और कर्म से हिन्दुत्व के प्रहरी योगीजी को विश्व हिन्दू महासंघ जैसी हिन्दुओं की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा भारत इकाई के अध्यक्ष का महत्त्वपूर्ण दायित्व दिया, जिसका सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए आपने वर्ष १९९७, २००३, २००६ में गोरखपुर में और २००८ में तुलसीपुर (बलरामपुर) में विश्व हिन्दू महासंघ के अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन को सम्पन्न कराया। सम्प्रति आपके प्रभामंडल से सम्पूर्ण विश्व परिचित हुआ।

आपकी बहुमुखी प्रतिभा का एक आयाम लेखक का है। अपने दैनिक वृत्त पर विज्ञप्ति लिखने जैसे श्रमसाध्य कार्य के साथ-साथ आप समय-समय पर अपने विचार को स्तम्भ के रूप में समाचार-पत्रों में भेजते रहते हैं। अत्यल्प शेष पृष्ठ 10 पर

## स्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम लड़कियों को मोदी द्वारा रु० ५१०००/- राखी पुरस्कार देने की घोषणा

**बुलन्दशहर** ७ अगस्त। दूरदर्शन पर राखी मनाए जाने के समाचार दिखाए जा रहे थे। इसी अवधि में मोदी ने स्वयं घोषणा की कि राखी उपहार में स्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम छात्राओं को इक्यावन हजार रुपए दिए जाएंगे। उनके बाद अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने एलान किया कि अभी तक ११ तथा १२ वीं कक्षाओं की अल्पसंख्यक लड़कियों को प्रति माह सहायता दी जाती थी। भविष्य में नवीं तथा दसवीं कक्षा की अल्पसंख्यक लड़कियों को प्रति माह दस दस हजार रुपए मिला करेंगे।

**प्रतिक्रिया**

१. भाजपा और मोदी ३ साल से पूरे देश में चिल्ला चिल्ला कर कह रहे थे कि सब का साथ-सब का विकास होगा लेकिन तुष्टीकरण किसी का भी नहीं होगा।

२. उपरोक्त दोनों घोषणाएँ नारे के विपरीत हैं।

३. इनमें मुस्लिमों/अल्पसंख्यकों का खुलकर तुष्टीकरण किया गया है।

४. ८० प्रतिशत बहुसंख्यकों की उपेक्षा-अवहेलना -तिरस्कार क्यों किया गया है?

५. अतः हमारी मांग है कि दोनों घोषणाएं वापिस ली जाएं अन्यथा बहुसंख्यक अपमानित महसूस करेंगे। और भाजपा से उनकी दूरी बढ़ेगी क्योंकि अब भाजपा कांग्रेसी संस्कृति के अनुसार कार्य कर रही है।

६. ऐसी विचित्र स्थिति में बहुसंख्यकों को सावरकरवादी बन जाना चाहिए तभी उन्हें महत्व व सम्मान मिल सकेगा।

**आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर**

## क्या चीन के माल का बहिष्कार करना संभव है?

**प्रतिक्रियावादी** भारत चीन के माल का बहिष्कार कर के चीन को सबक सिखाने की प्रतिक्रिया कर रहा है। लेकिन कभी सोचा कि वर्तमान स्थिति में क्या यह किसी भी तरह सम्भव है? लोग जिन सेलफोन या लैपटाप पर यह वीरोचित उद्घोष कर रहे हैं, उनमें ९० प्रतिशत चीन के बने हैं और बाकी के १० प्रतिशत में भी कई पार्ट्स चीन के बने मिलेंगे। नेहरू के सलाहकार और मार्गदर्शक जिन्हें अंधे की लाठी कहना अधिक उपयुक्त होगा वे कम्युनिस्ट थे जिन्होंने सुनियोजित षड़यंत्र के अंतर्गत ऊपर से मजदूर किसान गरीब और विद्यार्थियों के शुभचिंतक बनने का दिखावा करते हुए नेहरू के पूर्ण संरक्षण और यथासंभव वित्त-पोषण का लाभ उठाते हुए सब जगह अपनी विषैली जड़ें बहुत गहराई से और बहुत मजबूती से फैला लीं। एक बहुत बड़े षड़यंत्र को कुछ पंक्तियों में सूक्ष्म रूप से यूँ समझा जा सकता है कि चीन और रूस में मजदूरों को हड़ताल करने के अधिकार नहीं हैं लेकिन भारत के कम्युनिस्टों ने मजदूर हितरक्षण का ढोंग करते हुए जहाँ एक तरफ प्रत्यक्ष रूप में गो स्लो, पेन डाउन, टूल डाउन, वर्क टू रूल, स्ट्राइक, घेराव, कारखानों में तोड़फोड़, आगजनी, मैनेजरों से मारपीट या हत्या करते रहते थे, और वहीं दूसरी तरफ मालिकों से गुप्त रूप से मिल कर कारखाने चालू कराने के लिये आये दिन मोटी रकम ऐंठते रहते थे जिसके कारण उत्पादन लागत बढ़ती जाती थी और उत्पाद जनता की क्रय क्षमता से बाहर होते जाने के कारण माँग घटती जाती थी जिसके फलस्वरूप घाटा होने के कारण कारखाने बंद होते गये मजदूर बेकार होते गये उनके भूखों मरने की नौबत आने लगी। यह षड़यंत्र नेहरू के समय से चलता हुआ मनमोहन के समय तक राजकीय संरक्षण में खूब चला। इस बीच इन कम्युनिस्टों का मालिक चीन भारत के भूख मरते मजदूरों का तारणहार जीवनदाता बन कर सामने आया और बेकार हो चुके भूख मरते भारतीय मजदूर चीन के सस्ते घटिया माल को गली गली बेच कर अपना पेट पालने लगे। जो कारखाने कम्युनिस्टों ने बंद करवा दिये थे वे चीन जा कर वहाँ के चीनी मजदूरों को काम पर रख कर चालू कर दिये गये। आज यह वास्तविकता है कि भारत का उद्योग और उपभोक्ता चीन निर्मित वस्तुओं पर आश्रित कर दिया गया है। आज अभी चीन की बनी चीजों का उपयोग बंद कर के देख लो ५ मिनट में पूरा भारत ठप्प पड़ जायेगा क्योंकि दूरसंचार टेलीकम्युनिकेशन की अधिकांश चीजें चीन की बनी हैं और इसके बिना बाकी कोई चीज काम नहीं करेगी। किस किस चीज का नाम गिनायें जिस पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से चीन की छाप नहीं लगी है। चीन का समान लेना हिन्दू कैसे बंद कर सकते हैं? उसके लिये चरित्रबल, प्रचंड देशभक्ति चाहिये जो ९९ प्रतिशत में नहीं है। बाकी के १ प्रतिशत जिनमें ये है वे बोलते लिखते रहेंगे कोई फर्क नहीं पड़ता।

# ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री,
भारत सरकार, नार्थ ब्लॉक,
नई दिल्ली-११०००१

**विषय : हाई कोर्ट में हिंदी, क्षेत्रीय भाषाओं में कार्य करने के संबध में।**

**महोदय,**

उच्चतम न्यायालय की पूर्ण पीठ ने दिनांक १६ दिसंबर, २०१५ को विभिन्न उच्च न्यायालयों में संबंधित राज्य की राजभाषा के प्रयोग के संबंध में विचार किया और दिनांक ७ मई, १६६७, १५ दिसंबर, १६६६ और ११ अक्टूबर, २०१२ के निर्णय के अनुसार ही पुनः संबंधित उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषाओं के प्रयोग के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या राष्ट्रपति जी का दिनांक १३ जुलाई, २००५ का संकल्प संख्या ११०११/५२००३–रा.भा.(अनु) और राष्ट्रपति जी का दिनांक २४ नवंबर, १६६८ का संकल्प संख्या १/२००१२/४/६२–रा.भा.(नी–१) निरर्थक मान लिए गए और उच्चतम न्यायालय में इन पर गौर करने का भी कष्ट नहीं उठाया गया। यह सर्वविदित है कि राष्ट्रपति जी के आदेश सर्वोच्च संसदीय राजभाषा समिति की संस्तुतियों के आधार पर जारी हुए हैं। इस संबंध में यह भी विचारणीय है कि क्या माननीय गृहमंत्री जी और माननीय विधि एवं न्याय मंत्री जी परस्पर बातचीत करके इस मामले में उच्चतम न्यायालय से विचार–विमर्श करके राष्ट्रपति जी के आदेशों के पालनार्थ कोई गरिमामय मार्ग निकाल सकेंगे। विचार करने की कृपा करें, जिससे स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त हो और जनहित में लिए जा रहे अनेक निर्णयों की संख्या श्रृंखला में यह कार्य भी जुड़ जाए। निर्णयों की शृंखला में यह कार्य भी जुड़ जाए। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,
भवदीय

| | | |
|---|---|---|
| (चन्द्रप्रकाश कौशिक) | (मुन्ना कुमार शर्मा) | (वीरेश त्यागी) |
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | राष्ट्रीय महासचिव | राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री |

प्रतिष्ठा में,
श्री अरुण जेटली जी,
माननीय वित्त और कंपनी मामले मंत्री,
भारत सरकार, नार्थ ब्लॉक,
नई दिल्ली-११०००१

**विषय : आयकर विवरणी फार्म तथा आयकर विभाग की सभी आनलाइन सेवाएँ जुट अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी उपलब्ध कराने हेतु।**

**महोदय,**

यह बहुत आवश्यक है कि आयकर विवरणी के फार्म, आयकर विवरणी सीधे कम्प्यूटर से दाखिल करने की व्यवस्था, पैनकार्ड के लिए भी कम्प्यूटर से आवेदन का प्रबंध आदि अविलंब हिंदी में सुलभ हों। आयकर विवरणी के फार्म आयकर कार्यालयों में हिंदी में नहीं सुलभ होते, जबकि राजभाषा नियमावली १६७६ के नियम ११ के अनुसार सब फार्म हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साथ–साथ प्रकाशित होने अनिवार्य हैं। आप कृप्या अभी से मंत्रालय के राजभाषा कक्षा/प्रभाग से जाँच कराने का कष्ट करें कि उक्त फार्म हिंदी और अंग्रेजी में साथ–साथ प्रकाशित हुए हैं या नहीं। एक तरफ तो सरकार प्रयत्नशील है कि छोटे–बड़े सब व्यापारी आयकर विवरणी दाखिल करें और इसके विपरीत आचरण करते हुए आयकर विभाग हिंदी में फार्म भी सुलभ नहीं करा सकता अर्थात अंग्रेजी थोपने का कदाचार करते हुए यह आशा की जाती है कि अंग्रेजी न जानने वाले भी अंग्रेजी में विवरणी दाखिल करें। कृप्या इस कदाचार का संज्ञान अवश्य लिया जाए। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,
भवदीय

| | | |
|---|---|---|
| (चन्द्रप्रकाश कौशिक) | (मुन्ना कुमार शर्मा) | (वीरेश त्यागी) |
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | राष्ट्रीय महासचिव | राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री |

## डॉ सुनील कुमार परीट जी को ''शतकवीर सम्मान''

**दिनांक** २०–०८–२०१७ को दिल्ली की मंजिल ग्रुप साहित्यिक मंच (मगसम) का कर्नाटक के बेंगलूरु में बनशंकरी में रचना पाठ एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती बी.एस. शांताबाई, मुख्य अतिथि डॉ. मोहनचंद्र जोशी, संस्था के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुधीर सिंह 'सुधाकर', बेंगलूरु संयोजिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव, समाज सेवक श्री मदन बलदोता सभी ने मिलकर डॉ. सुनील कुमार परीट जी को ''शतकवीर सम्मान'', ''रचना प्रतिभा सम्मान'', ''रचना रजत प्रतिभा सम्मान'' प्रदान करके गौरवान्वित किया। संस्था के सदस्य और पाठक डॉ. परीट जी के रचनाओं को दो हजार से अधिक ग्रीन कार्ड दिया है, और संस्था ने उनको मगसम का दक्षिण भारत के प्रभारी के रूप में नियुक्त किया है। ज्ञात हो डॉ. परीट जी अहिंदी प्रदेश कर्नाटक के कन्नड़ भाषी होते हुए भी हिंदी साहित्यकार हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

## योगी आदित्य नाथ कौन........

अवधि में ही 'यौगिक षटकर्म', 'हठयोग–स्वरूप एवं साधना', 'राजयोग–स्वरूप एवं साधना' तथा 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' नामक पुस्तकें लिखीं। श्री गोरखनाथ मन्दिर से प्रकाशित होने वाली वार्षिक पुस्तक 'योगवाणी' के आप प्रधान सम्पादक हैं तथा 'हिन्दवी' साप्ताहिक समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक रहे। आपका कुशल नेतृत्व युगान्तकारी है और एक नया इतिहास रच रहा है।

व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम

भगवामय बेदाग जीवन–योगी आदित्यनाथ जी महाराज एक खुली किताब हैं जिसे कोई भी कभी भी पढ़ सकता है। उनका जीवन एक योगी का जीवन है, सन्त का जीवन है। पीड़ित, गरीब, असहाय के प्रति करुणा, किसी के भी प्रति अन्याय एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध तनकर खड़ा हो जाने का निर्भीक मन, विचारधारा एवं सिद्धान्त के प्रति अटल, लाभ–हानि, मान–सम्मान की चिन्ता किये बगैर साहस के साथ किसी भी सीमा तक जाकर धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का प्रयास उनकी पहचान है।

पीड़ित मानवता को समर्पित जीवन–वैभवपूर्ण ऐश्वर्य का त्याग कर कंटकाकीर्ण पगडंडियों का मार्ग उन्होंने स्वीकार किया है। मैं अपने लिए इन तमाम सुखों के बदले केवल प्राणिमात्र के कष्टों का निवारण ही चाहता हूँ। पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज को निकट से जानने वाला हर कोई यह जानता है कि वे उपर्युक्त अवधारणा को साक्षात् जीते हैं। वरना जहाँ सुबह से शाम तक हजारों सिर उनके चरणों में झुकते हों, जहाँ भौतिक सुख और वैभव के सभी साधन एक इशारे पर उपलब्ध हो जाएँ, जहाँ मोक्ष प्राप्त करने के सभी साधन एवं साधना उपलब्ध हों, ऐसे जीवन का प्रशस्त मार्ग तजकर मान–सम्मान की चिंता किये बगैर, यदा–कदा अपमान का हलाहल पीते हुए इस कंटकाकीर्ण मार्ग का वे अनुसरण क्यों करते?

सामाजिक समरसता के अग्रदूत–'जाति–पाँति पूछे नहिं कोई–हरि को भजै सो हरि का होई' गोरक्षपीठ का मंत्र रहा है। गोरक्षनाथ ने भारत की जातिवादी–रूढ़िवादिता के विरूद्ध जो उद्घोष किया, उसे इस पीठ ने अनवरत जारी रखा। गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के पद–चिन्हों पर चलते हुए पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने भी हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, जातिवाद, क्षेत्रवाद, नारी–पुरुष, अमीर–गरीब आदि विषमताओं, भेदभाव एवं छुआछूत पर कठोर प्रहार करते हुए इसके विरुद्ध अनवरत अभियान जारी रखा है। गाँव–गाँव में सहभोज के माध्यम से 'एक साथ बैठें–एक साथ खाएँ' मंत्र का उन्होंने उद्घोष किया।

भ्रष्टाचार–आतंकवाद–अपराध विरोधी संघर्ष के नायक–योगी जी के भ्रष्टाचार–विरोधी तेवर के हम सभी साक्षी हैं। अस्सी के दशक में गुटीय संघर्ष एवं अपराधियों की शरणगाह होने की गोरखपुर की छवि योगी जी के कारण बदली है। अपराधियों के विरुद्ध आम जनता एवं व्यापारियों के साथ खड़े होने के कारण आज पूर्वी उत्तर प्रदेश में अपराधियों के मनोबल टूटे हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में योगी जी के संघर्षों का ही प्रभाव है कि माओवादी–जेहादी आतंकवादी इस क्षेत्र में अपने पाँव नहीं पसार पाए। नेपाल सीमा पर राष्ट्र–विरोधी शक्तियों की प्रतिरोधक शक्ति के रूप में हिन्दू युवा वाहिनी सफल रही है।

# हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का
## दाऊद इब्राहिम को भारत लाने.....

वापस लाया जा सके। उन्होंने यहां कहा दाऊद इब्राहिम पाकिस्तान में है। उस देश ने उसे शरण दी है, वह देश दाऊद को कानून का सामना करने के लिए भारत लाने में रोड़े अटका रहा है। राजीव महर्षि का कार्यकाल गुरुवार ३१ अगस्त को समाप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान का रवैया अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुरूप नहीं है और वह दाऊद के मामले में भारत के खिलाफ काम कर रहा है। उन्होंने कहा जिस किसी कार्रवाई की जरूरत है, हम कर रहे हैं। हम उसे वापस लाएंगे, प्रक्रिया जारी है। लेकिन पाकिस्तान का रवैया अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुरूप नहीं है। कानूनी प्रक्रिया चल रही है, हम उसे उचित समय पर हासिल कर लेंगें। विस्फोटों के बाद वह भारत से भाग गया और अभी पाकिस्तान में छिपा हुआ है। गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने अप्रैल में कहा था कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि दाऊद अब भी पाकिस्तान में है। पिछले १० सालों में, भारत ने मुंबई विस्फोट मामले में दाऊद को आरोपी बताते हुए पाकिस्तान को कई दस्तावेज सौंपे हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने पाकिस्तान की सरकार से मांग की है कि मुम्बई बम ब्लास्ट के षड़यंत्रकारी दाऊद इब्राहिम को शीघ्र भरत को सौंपा जाये।

शेष पृष्ठ 5 का
## वर्ण व्यवस्था तथा जात-पात........

जिले के धर्मपुर में धनराज हरिजन को इसलिए जिन्दा जला दिया गया कि उसने अपनी पत्नी कुच्ची देवी को सामंतों की हवस शांत करने के लिए उसके साथ भेजने को मना कर दिया था। वैदिक वर्ण–व्यवस्था पुनः स्थापित करने तथा जात–पात को समाप्त करने के लिए देश में ऐसा संगठन बनाने की आवश्यकता होती है जिसमें चरित्रवान–निष्ठावान तथा निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले पूर्णकालिक व्यक्ति हों, जो देश में जाकर इस कार्य को करें। गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर अन्तर–जातीय विवाह भी वर्ण–व्यवस्था तथा जात–पात रहित समाज का निर्माण करने में सहायक हो सकते हैं। श्री रामराज में भारत की राजधानी दिल्ली में ५–११–२००१ को हजारों की संख्या में दलित समाज के व्यक्तियों का हिन्दू–धर्म धर्मान्तरण कराकर यह सिद्ध कर दिया है कि अब भी हिन्दुओं के नेता नहीं जागे तो हिन्दू धर्म अल्पसंख्यकों में आ जाएगा।


# साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

**विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं**

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

**हमारा संकल्प**

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

***केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।***
***आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।***

**तत्काल ग्राहक बनें :-**
***सदस्यता शुल्क***

**वार्षिक.............................................150/- रुपये**
**द्विवार्षिक.........................................300/- रुपये**
**आजीवन सदस्य..................................1500/- रूपये**

**ड्राफ्ट या मनीआर्डर**
**''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।**
***पता :-*** **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

**नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**


शेष पृष्ठ 7 का
## नासूर बनता बंग्लादेशी घुसपैठियों.....

एकजुटता ही उनकी शक्ति है। देश के मानवतावादी, सेक्युलर व देशद्रोही इनको इस्लाम के बहाने उकसाने में पूरा सहयोग देते है और हमको अहिंसा व शांति के चंगुल में फंसा कर भ्रमित करते रहते है। जिस प्रकार नोएडा की महागुन सोसायटी में इन जिहादियों ने जो बर्बरता की है उसको अगर कठोरता से नही निपटाया गया तो बहुत बडी भूल होगी और भविष्य और भयंकर होगा। केंद्र व राज्य में मोदी जी व योगी जी के होते हुए यह दुःसाहस अत्यधिक दुर्भाग्यपूर्ण है। मोदी जी के २६ मई २०१४ को प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने से पहले ही सीलमपुर (दिल्ली) से कुछ बंग्लादेशी मोदी जी के भय से वापस अपने देश जाने लगें थे परंतु जब बंग्लादेशियों को बाहर निकालने का आह्वान चुनावी जुमला रह गया तो पुनः घुसपैठ करते आ रहें है। अभिप्राय यह है कि अगर ऐसी घटनाओं के संकेत को समझें और अपने घरों व अन्य प्रतिष्ठानों में इन बंग्लादेशी और जेहादी तत्वों का कार्यहेतु प्रवेश वर्जित करो नही तो इनके भरण पोषण होते रहने से जो शक्ति इन्हें मिलती है उससे ये आपराधिक गतिविधियों से हमें हमारी धरती पर ही अनेक प्रकार से हानियां पहुँचा कर जिहाद के लिए सक्रिय रहेंगे।

शेष पृष्ठ 12 का
## लहूलुहान है पश्चिम एशिया.......

को सीरिया के गृह युद्ध में झोंक दिया। खाड़ी के देशों सहित कोई राष्ट्र मुस्लिम ब्रदरहुड की सरकार को सत्ता में नहीं देखना चाहता क्योंकि मिस्र में किए गए प्रयोग से पहले ही उन सबके हाथ जल चुके हैं। अंततः रूस सीरिया में कूद पड़ा। रूस ने आईएस और बशर विरोधी विद्रोहियों के ठिकानों पर बमबारी की। उसने विद्रोहियों की कमर तोड़ दी। हालांकि अमरीका को रूसी हस्तक्षेप पसंद नहीं आया। दोनों देशों में तनातनी भी चल रही है। सीरियाई सेना ने मार्च माह में पलमायरा शहर को आईएस से मुक्त करा लिया था लेकिन अब आईएस के लड़ाकों ने फिर से वहाँ कब्जा कर लिया है। पश्चिम एशिया तो लहूलुहान है ही तुर्की, मिस्र, नाइजीरिया, सोमालिया आदि देशों में भी रोज–रोज के बम धमाकों में निर्दोष नागरिक मारे जा रहे हैं। नाइजीरिया में तो ७–८ साल की दो आत्मघाती लड़कियों ने व्यस्त बाजार में खुद को उड़ा लिया। मुस्लिम बहुल देशों में स्थिति बहुत भयानक है। क्या इन देशों में लड़ाई कभी खत्म होगी? फिलहाल तो ऐसी कोई उम्मीद नहीं क्योंकि वैश्विक शक्तियाँ अपने–अपने हितों की रक्षा के लिए अपना–अपना खेल खेल रही हैं।

शेष पृष्ठ 1 का
## आईआईटी और सेंट्रल यूनिवर्सिटी.......

मुक्त, अस्वच्छता–मुक्त और गरीबी–मुक्त समाज, बनाने की प्रतिज्ञा ली थी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर से मांग की है कि विश्वविद्यालयों में राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन हो ताकि राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिल सके।

शेष पृष्ठ 8 का
## हिन्दू अस्तित्व, संकट......

**६०० करोड़ पौंड प्रतिवर्ष (१६६४ आधार) आमदनी होती है। सऊदी अरेबिया की आबादी ६० लाख है। इसका मतलब हुआ कि प्रति परिवार, स्त्रियों और बच्चों सहित, प्रत्येक व्यक्ति की आमदनी १००० पौंड हुई और यदि एक परिवार में ५ व्यक्ति हैं, तो प्रत्येक परिवार की आमदनी ५००० पौंड (५ लाख रु०) हुई।**

**तेल की सम्पदा प्राप्त करने से पहले 'हज्ज' अरबों की आमदनी का एक मुख्य साधन था। इससे कोई भी पैगम्बर मुहम्मद की देशभक्ति का सहज अनुमान लगा सकता है। इसके साथ ही, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान और अरेबिया की पवित्रता में विश्वास बढ़ता है। इसी के साथ सारे विश्व के करोड़ों लोगों को मक्का की ओर मुड़कर और झुककर प्रार्थना करने और दैवी कृपा माँगने के बारे में सोचिए। ऐसा सब कुछ केवल एक साल में या एक माह में एक बार ही नहीं होता है, बल्कि प्रतिदिन ५ बार।**

**उन्होंने 'जिहाद' के सिद्धांत को स्थापित किया, जिसका अर्थ है- ''गैर-मुस्लिमों के देश पर अधिकार करने, उनकी सम्पत्ति और स्त्रियों पर कब्जा करने और उन्हें अरेबिया के शासन के अधीन लाने के लिए उनसे सशस्त्र युद्ध करना।'' कोई भी व्यक्ति केवल अल्लाह में विश्वास करने से मुसलमान नहीं बन सकता है, उसे अल्लाह और मुहम्मद दोनों पर ईमान लाना होगा।**

(नोट : यह बात कुरान में एक साथ नहीं है, अलग–अलग जगह पर कहीं गई है, परन्तु हदीसों में एक साथ है)

**(शेष अगले अंक में)**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77



## यह भी सच है

# लहूलुहान है पशिचम एशिया

✍ अश्विनी कुमार

**पश्चिम** एशिया में वर्षो से युद्ध चल रहा है। इसमें विदेशी शक्तियों के शामिल हो जाने से हालात पहले से भी ज्यादा खराब हो चुके हैं। अब तक हजारों लोग मारे जा चुके हैं। और लाखों लोगों को घरबार छोड़कर शरणार्थी बनना पड़ा। दूसरे देशों में जाने के प्रयास में सैकड़ो लोग समुद्र में हादसों का शिकार होकर मारे जा चुके हैं। युद्ध से जर्जर हो चुके पश्चिम एशिया में शांति स्थापना के सभी प्रयास विफल हो चुके हैं। इस क्षेत्र के देशों–इराक और सीरिया के भीतर आंतरिक युद्ध छिड़ा हुआ है। इराक में इस्लामिक स्टेट के आतंकवादियों के खिलाफ सरकारी सेना लड़ रही है वहीं सीरिया में सरकार और विद्रोहियों के बीच घमासान युद्ध चल रहा है। सीरिया में दो वैश्विक ताकतें कूद पड़ी हैं। रूसी सेना जहाँ सरकारी सेना का साथ दे रही है वहीं अमेरिका विद्रोहियों की मदद कर रहा है। लड़ाई में जन–धन की भारी हानि हो रही है और यह लड़ाई विदेशी ताकतों के हस्तक्षेप से और भी भयानक हो चुकी है। सीरिया और इराक में वर्ष २०१४ के अंत में अमरीका के नेतृत्व वाले गठबंधन बल के अभियानों की शुरूआत से अब तक आईएस के कम से कम ५० हजार जेहादी मारे जा चुके हैं। आईएस विरोधी संगठनों द्वारा आतंकवादियों के खिलाफ १६ हजार हवाई हमले किए जा चुके हैं। गठबंधन ने आईएस से लड़ने वाले स्थानीय बलों को भी प्रशिक्षण और हथियार मुहैया करवाए हैं हवाई हमले में आम नागरिक भी हताहत हो रहे हैं। हालांकि एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इन अभियानों में १७३ नागरिकों की मौत हुई है, जबकि आलोचकों का कहना है कि असली आंकड़े कहीं ज्यादा हैं। अमरीका नीत गठबंधन पहले ही कह चुका है कि वह आईएस का सीरिया और इराक में अंतिम रूप से हराने के लिए चल रहे अभियानों के प्रभावी होने का पैमाना हताहतों की संख्या से नहीं मापता। इराक की सरकारी सेना ने देश के सबसे बड़े शहर मोसुल के बड़े क्षेत्र को आईएस के कब्जे से लगभग मुक्त करा लिया है। अब आईएस सरगना बगदादी और उसके लड़ाके भाग रहे हैं। किरकुट में भारी लड़ाई के बाद इराकी सेना ने वहाँ नियंत्रण स्थापित कर लिया है। इराक में अमरीका के सैनिक पूरी तरह सक्रिय रहे हैं लेकिन अब अमरीका लगातार आईएस के कब्जे वाले क्षेत्रों पर बमबारी करवा रहा है। आईएस के खिलाफ जंग में तुर्की ने शामिल होने का प्रस्ताव किया था लेकिन इराक ने उसे स्वीकार नहीं किया। जैसे–जैसे मध्य–पूर्व एशिया में आतंकवादी संगठन आईएस यानी इस्लामिक स्टेट की पकड़ कम होती जा रही है, अमरीका के लिए अगले दो वर्ष में आईएस से प्रेरित हमलों का खतरा भी कहीं ज्यादा बढ़ गया है। अमरीका रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि जैसे–जैसे अमरीका आईएस को समेटता जाएगा, वे पलटवार करेंगे। वैसे सीरिया में लम्बे अर्से से गृह युद्ध लड़ रहे आईएस के बहुत से हमलों को अमरीका झेलता रहा है। इसी साल जून माह में आयरलैंड के एक नाइट क्लब में हुआ हमला भी शामिल है, जिसमें ४६ लोगों को मार डाला गया था। इसके अलावा पिछले साल दिसम्बर में कैलिफोर्निया से सेन बर्नाडिनो स्थित सोशल सर्विस एजेंसी में १४ लोगों की हत्या कर दी गई थी। अब तो आईएस ने सीरिया और इराक में विदेशी लड़कों के बच्चों को ट्रेनिंग देनी शुरू कर दी है ताकि नई पीढ़ी के आतंकवादियों को तैयार किया जा सके लेकिन अब बगदादी की राह आसान नहीं है।

बगदादी का सारा धन रखने वाला लड़ाका अपनी प्रेमिका के साथ भाग चुका है। धन की कमी से जूझ रहा आईएस पिछले दो वर्षों में अपने कब्जे वाली करीब एक चौथाई भूमि खो चुका है। मध्य–पूर्व एशिया के देश सीरिया में लगातार खून की होली खेली जा रही है और दुनिया की सारी महाशक्तियाँ तमाशबीन बन मैदान के बाहर बैठकर नरसंहार को देख रही हैं।... मध्य–पूर्व के राष्ट्रों ट्यूनीशिया, लीबिया, मिस्र और यमन की तरह लगभग तीन साल पहले यहाँ की जनता ने भी तानाशाह राष्ट्रपति बशर अली असद और उनकी सरकार के खिलाफ जंग छेड़ दी थी। आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहे यूरोपीय देशों और अमरीका ने इस मसले पर पूरी दूरी बनाए रखना ही उचित समझा।... इसका दूसरा बड़ा कारण यह है कि मध्य–पूर्व एशिया के अन्य देशों से जहाँ तानाशाहों को उखाड़ा गया वहाँ दो वर्ष बाद भी कोई वैकल्पिक सशक्त व्यवस्था उभर कर उन देशों को नेतृत्व नहीं दे सकी। सारे देश अराजकता के दौर से गुजर रहे हैं। रूस और चीन बशर को हटाने का विरोध कर रहे हैं। गृह युद्ध में फंसे सीरिया में नया मोड़ तब आया जब आतंकवादी संगठन मुस्लिम ब्रदरहुड ने मौका देखकर अपनी शक्ति शेष पृष्ठ 11 पर

## कबिरा खड़ा बजार में

### आंखें बंद करके नहीं, खोलकर रहें

**जो** व्यक्ति बड़ी–बड़ी विदेशी कारों में चलता हो, फिल्में बनाता हो, उनमें हीरो की भूमिका भी खुद ही निभाता हो, खुद को बाबा कम रॉक स्टार अधिक मानता हो, जिस पर रेप का आरोप सिद्ध हो गया हो। जिसकी जीवनशैली राजा महाराज की तरह हो, जिसमें आध्यात्मिक गुरू का कोई तत्व न हो, ऐसा व्यक्ति क्या बाबा कहलाने लायक है। रेप के आरोप में राम रहीम को दोषी करार दे दिये जाने के बाद यह सवाल मुखर हो उठा है। भारत में आध्यात्मिक परंपरा बहुत पुरानी है। आदि शंकराचार्य से लेकर महर्षि अरविंद, राम.ष्ण परमहंस, चौतन्य महाप्रभु, विवेकानंद, परमहंस योगानंद, आचार्य शंकर देव जैसे अनगिनत संतों ने भारत की आध्यात्मिक परंपरा को जीवंत बनाये रखा है। इसी तरह पंजाब और हरियाणा में डेरों की परंपरा भी बड़ी पुरानी है। इनका समाज में व्यापक प्रभाव रहा है। समाज सुधार में इनकी भूमिका रही है। सिख समाज जब संघर्ष में होता था, तो ऐसे में डेरे महिलाओं व बच्चों को संरक्षण देते थे। डेरा सच्चा सौदा भी इसी परंपरा से आता है। डेरा सच्चा सौदा की स्थापना १६४८ में शाह मस्ताना महाराज ने की थी। उसके बाद शाह सतनाम महाराज ने गद्दी संभाली और १६६० में गुरमीत सिंह को गद्दी मिली। गुरमीत मूल रूप से राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के रहने वाला है। ऐसा दावा किया जाता है कि इसके डेरे के देश विदेश में फैले अनुयायियों की संख्या करोड़ों में है। लेकिन उनका प्रतिनिधित्व कौन करता है। गुरमीत राम रहीम नामक शख्स, जो कभी इसान बन जाता है, तो कभी बाबा राम रहीम। वह खुद को भगवान के संदेशवाहक के रूप में पेश करता है। ऐसे रंगीन कपड़े पहनता है कि बॉलीवुड के हीरो भी शरमा जायें। २००७ में गुरमीत सिंह ने गुरु गोबिंद सिंह जैसी वेशभूषा धारण कर फोटो खिंचवायी, जिसका सिख समाज ने विरोध किया। पंजाब की एक स्थानीय अदालत ने डेरा प्रमुख के खिलाफ गैरजमानती वारंट भी जारी कर दिया था, जिसके बाद पंजाब में जगह–जगह हिंसक प्रदर्शन हुए और माफी के बाद मामला समाप्त हो गया। १७ जुलाई २०१२ को हाइकोर्ट में याचिका दायर कर राम रहीम पर डेरे के ४०० साधुओं को नपुंसक बनाये जाने का आरोप लगाया गया। रणजीत सिंह नामक व्यक्ति डेरा की प्रबंधन समिति का सदस्य था और उसकी भी १० जुलाई २००३ को हत्या कर दी गयी। २०१० में डेरा के ही पूर्व साधु राम कुमार बिश्नोई ने हाइकोर्ट में याचिका दायर कर डेरा के पूर्व मैनेजर फकीर चंद की गुमशुदगी की सीबीआइ जांच की मांग की थी। आरोप था कि फकीर चंद की हत्या की गयी थी। सबूत जुटाने में विफल सीबीआइ ने क्लोजर रिपोर्ट फाइल कर दी। बिश्नोई ने हाइकोर्ट में उस क्लोजर रिपोर्ट को चुनौती दी है। अगर इस पृष्ठभूमि पर गौर करें तो पायेंगे कि भारी राजनीतिक और सामाजिक रसूख वाले राम रहीम को सजा दिलवाना कोई आसान काम नहीं था। कुछ समय पहले राम रहीम कांग्रेस के पाले में था। लेकिन पिछले हरियाणा विधानसभा चुनावों में बाबा को भाजपा ने साध लिया। राजनीतिक दल हिंसा की तो निंदा कर रहे हैं लेकिन कोई बड़ा नेता राम रहीम को सीधे निशाने पर नहीं ले रहा। मीडिया जरूर राम रहीम की कारगुजारियों को सामने ला रही है। ऐसे ताकतवर शख्स के खिलाफ लगभग १५ साल पहले डेरे की एक साध्वी ने प्रधानमंत्री कार्यालय को चिट्ठी लिखी और आरोप लगाने की हिम्मत जुटायी। २००१ में पूरे मामले की जांच सीबीआई को सौंपी गयी, सीबीआइ ने अपनी रिपोर्ट विशेष अदालत को सौंपी। इसका सबक यही है कि किसी भी बाबा के अंधभक्त न बनें और अगर आपके परिवारजन किसी बाबा के बारे में विपरीत बातें कह रहे हैं, तो उसे अवश्य सुनें और उस पर ध्यान दें।

**वीरेश त्यागी**

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 13 सितम्बर से 19 सितम्बर 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।